अग्रसेन गीतांजलि

(अग्रवाल समाज से संबंधित गीतों का संकलन)

धर्मशालाएं

प्याऊ

भोजनालय

चिकित्सालय

रैनबसेरे

विद्यालय

मन्दिर

जलाशय

सामूहिक विवाह

परिचय सम्मेलन

गौरक्षा

उद्योग

बैंक

व्यापार

लेखक / प्रस्तुतकर्ता : प्रहलाद कुमार गुप्ता

पुस्तक अग्रसेन गीतांजली के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई

TRIPURA
MARBLE (Pvt.) LIMITED

Leading Mine owners & Processrs of White & Pink
Banswara Marble Blocks, Slabs, Chips and Powder
GUPTA SADAN, Talwara-327025
District-Banswara (Raj.)
Tel: Off. 02962-20012, 20043, Fac. 20211
Res. 20101, 20102, 20103, 20104, 20032

।।जय महाराजा अग्रसेन।। ☎ 591263

मधु एडवरटाईजिंग कं.

ऑफिस : बाहुबली ज्वैलर्स के पास, किसान मार्ग, टोंक फाटक, जयपुर

ग्लोसाईन बोर्ड, बैनर, ऑफसेट एवं स्क्रीन प्रिंटिंग कमर्शियल डिजाइनिंग, कम्प्यूटर जॉब वर्क के लिए सम्पर्क करें।

गुणवता, समयबद्धता एवं आपकी संतुष्ठी हमारा ध्येय

भगवती प्रसाद सिंहल,
तीकरिया वाले

☎ : शो-रूम-503195,
निवास-503221

सिंहल ट्रेडर्स

सभी प्रकार की सैनेटरी एवं पाईप फिटिंग के थोक व खेरीज विक्रेता

एस-15-16, रूपनगर प्रथम, अर्जुन नगर फाटक के पास,
महेश नगर, जयपुर-302015

अग्रसेन गीतांजलि

(अग्रवाल समाज से संबंधित गीतों का संकलन)

मार्गदर्शक :

डा. गिरिराज प्रसाद मित्तल
महामंत्री, पूर्वी राज. अग्रवाल सम्मेलन

हरिचरण सिंहल
महामंत्री, अग्रवाल समाज मालवीय नगर, जयपुर

लेखक/प्रस्तुतकर्ता :

प्रहलाद कुमार गुप्ता
B.Sc. LLB, DLL, DIC, CAIIB, BJMC
एस-9, माया मन्दिर, पुष्पांजलि कॉलोनी,
महेशनगर फाटक, जयपुर -302015

o सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य - 20/- रुपये

मुद्रक : भारत प्रिन्टिंग प्रेस, हनुमान का रास्ता, जयपुर

पुस्तक मिलने का स्थान :

1. प्रहलाद कुमार गुप्ता, एस -9, माया मन्दिर, पुष्पांजलि कॉलोनी, महेश नगर फाटक,जयपुर-302015
2. डॉ. राधा गुप्ता, प्राचार्य, विधि महाविद्यालय, बांसवाडा
3. डॉ. गिरिराज प्रसाद मितल, 38/46, किरण पथ, मानसरोवर,जयपुर
4. भारत कार्डस, 490 हुनमान का रास्ता, जयपुर
5. श्री हरिचरण सिंहल, **PRO, C/o** दी राज. स्टेट को आपरेटिव बैंक नेहरू बाजार, जयपुर

विषय सूची

समर्पण	5
आभार	6
अग्रवाल समाज के प्रणेता	7
श्री गणेश वन्दना	9
सरस्वती वन्दना	9
आरती श्री लक्ष्मी जी	10
श्री लक्ष्मी वन्दना	10
आरती जय अग्रसेन हरे	11
श्री अग्रसेन महाराज वन्दम्	11
यही मेरी शुभकामना हैं	12
अग्रसेन अभिनन्दन गीत	13
अमर रहे यह नाम तुम्हारा	14
वह अग्रवाल कहाता हैं	14
अग्रसेन की अमर कहानी	15
मन चल अग्रोहा धाम	16
अमन पुजारी जनहितकारी	17
अपने कर्तव्य पद को संवारो	17
अग्रवाल कहलाता हूं मैं	18
अमर हमारा अग्रवंश हैं	19
यह कौम अग्रवालो की	20
ध्वजा केसरिया	21
अग्रसेन है इसिलिये	21
अग्रवाल के नाम से हैं यह विपुल समाज	23
अग्रसेन के वंशज हैं हम अग्रवाल कहलाते है	24
अग्रवालोउठो वक्त खोओ नहीं	25
अजेय अग्रबन्धुओं। बढ़े चलो बढ़े चलो	26
अग्रसेन के पावन पथ पर	27
जलती रहे मशाल	28
अग्रवंश के मानव अपनी, मानवता में रस घोलो	29
दिन में फेरे शुरु करो	30

आने वाला मनमोहक कल, हमको रहा पुकार	31
अग्रवालो अग्रता की बात सोचो	32
मेरे कवि के लिये समस्या, बनी जयन्ति आज की	33
जयति अग्रध्वज ब्योम बिहारी	34
हे ध्वज बारम्बार प्रणाम	34
ध्वजराज तुम्हें शत शत प्रणाम	35
अग्रपताका तेरी जय हो	35
गौरवशाली अग्रवंश का ध्वज केसरिया नमो नमो	36
अग्रसेन के अग्रवशं की जो महिमा गाते	37
अग्रसेन अष्टक	38
ऐसो ठाट वाट वारौ अग्रसेन हमारो है	39
तुम अग्र ज्योति की प्रथम किरण	40
हे अग्रवंश तुमको प्रणाम	40
अग्रवंश के मूल प्रवर्तक	41
युग पुरुष । युग युग तुम्हारी मैं कंरुगी वन्दना	42
उस कोख को हजार बार नमन	43
वरदान हमें शुभ ऐसा दो	43
सूर्यवंश के उत्तम कुल में महीधर नाम नरेश हुआ	44
तुमको प्रणाम शत शत प्रणाम	45
अग्रवंश प्रवर्तक तुमको शत शत बार प्रणाम	46
समाजवाद के प्रथम प्रवक्ता	46
वह कौन कहो जिसने एक नया अभियान दिया	47
श्री अग्रसेन चालीसा	48
नींव का अस्तित्व	50
सहयोग की भावना	51
अपनी पत्नि क्यों छोड़ दी	52
सासू जी से एक निवेदन	53
चरणाम्बुज में बन्दन है	54
कविता लेखकों के पते	55

समर्पण

महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा एवं अग्रवाल समाज की गतिविधियों से संबंधित पर्याप्त साहित्य उपलब्ध हो और अधिकतम लोगों को इनकी जानकारी हो, इस दृष्टि से डा. गिरिराज प्रसाद मित्तल द्वारा लिखित "महाराजा श्री अग्रसेन जी का जीवन चरित्र" एवं श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली द्वारा प्रकाशित "अग्र-काव्य" से प्रेरणा लेकर श्री हरिचरण सिंघल के मार्गदर्शन में यह प्रथम पुष्प महाराजा अग्रसेन जी के चरणों में अग्रवाल बन्धुओं के उपयोग हेतु प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसमें कुछ कविताएं मेरी स्वयं की रचनाएं हैं तथा अन्य विभिन्न कवियों की चयनित रचनाओं का संकलन है जिनके लेखकों के नाम यथास्थान दिये गये हैं। कतिपय रचनाओं के लेखकों के नाम मालुम न होने से उनके नाम नहीं दे पाया हूं। पुस्तक के तैयार करने में मेरा यह प्रयास कितना सार्थक रहा, इसका मूल्यांकन तो आप प्रबुद्ध पाठक ही कर सकेंगे। पुस्तक के संबंध में आपकी टिप्पणी, आलोचनाएं एवं सुझाव आमंत्रित हैं।

आभार

सर्व प्रथम मैं परमपिता परमात्मा के साथ श्री श्री 1008 श्री महाराज अग्रसेन जी और अग्रवाल समाज का आभारी हूं जिन्होंने मुझे ऐसे सम्माननीय समाज में जन्म दिया।

डा. गिरिराज प्रसाद मित्तल, महामंत्री पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन एवं प्रधान सम्पादक - "अग्रोदक", श्री हरिचरण सिंहल, जन-सम्पर्क अधिकारी, शीर्ष सहकारी बैंक एवं महामंत्री, अग्रवाल समाज मालवीयनगर, जयपुर तथा श्री गोवर्धन लाल गर्ग, एडवोकेट प्रधान सम्पादक प्रजानन गंगापुर सिटी का मैं अत्यंत आभारी हूं जिन्होंने सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में न केवल मुझे प्रेरणा व मार्गदर्शन दिया अपितु हर समय प्रत्येक कार्य में मेरा व्यक्तिशः साथ दिया। मैं श्री प्रदीप मित्तल, अध्यक्ष-अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं श्री राधेश्याम गोयल, अध्यक्ष-पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन का आभारी हूं जिन्होंने मुझे पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन का मुख्य प्रवक्ता नियुक्त कर समाज में पहचान दी। श्री चौथमल भगेरिया, अध्यक्ष व श्री अरुण अग्रवाल, महामंत्री जयपुर महानगर एवं देहात जिला अग्रवाल सम्मेलन, श्री हरिकृष्ण गोयल एवं श्री अग्रवाल समाज समिति, गीजगढ़ बिहार, हवा सड़क जयपुर, महाराजा अग्रसेन मंच जयपुर एवं अन्य सभी समाज समितियों का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु मुझे प्रोत्साहित किया। मैं आभारी हूं इस पुस्तक के प्रकाशक श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, भारत प्रिंटिंग प्रेस, हनुमान का रास्ता, जयपुर का जिन्होंने समाज हित में इस पुस्तक को प्रकाशित किया।

अग्रवाल समाज के प्रणेता - महाराजा श्री अग्रसेन जी

अग्रवाल समाज को त्याग और समाज सेवा श्री प्रेरणा देने वाले कुल देवी महालक्ष्मी के उपासक श्री श्री 1008 श्री अग्रेसन जी न केवल अग्रवाल समाज अपितु समस्त मानव समाज के प्रेरक और मार्गदर्शक रहे हैं। प्रति वर्ष हम उसी पूज्य महापुरूष को उनकी जयन्ति पर याद करते हैं और अपने अपको गौरान्वित महसूस करते हैं। वर्ष 2001 में 17 अक्टूबर को यह उनकी 5125 वीं जयन्ति है।

महाराजा श्री अग्रसेन जी का जन्म आसोज शुक्ला एकम् अर्थात नवरात्रा स्थापना के शुभ दिवस पर महाभारत काल में वल्लभी गणराज्य में हुआ था। इनके पिता वल्लभी गणराज्य के अधिपति थे। इनके पिता का नाम वल्लभ एवं माता का नाम वल्लभा था। वह युग ऋषि और महर्षियों का युग था। राजा अपने राज्य का संचालन महर्षियों के मार्गदर्शन में करते थे। नामकरण संस्कार के समय महर्षि गर्ग ने इनका नाम "अग्र" रखा। उस समय ऋषि नारद ने कहा कि ये बालक चक्रवती सम्राट बनेगा। बालक अग्रसेन प्रारंभ से ही कुशाग्र एवं तीक्ष्ण बुद्धि वाले थे तथा बाल्यकाल में राज्य सभा में आने वाले विद्वानो की वार्ता बड़े ध्यान से सुना करते थे। गुरूकुल में इन्होने वेद और पुराणों का अध्ययन करने के साथ-साथ घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार और अश्व-विद्या में निपुणता हासिल करली थी।

युवावस्था में आपका विवाह माधवी एवं सुन्दरावती नामक कन्याओं से हुआ। बाद में इनके 16 विवाह और हुए। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन जी के कुल 18 रानियां थी। इन 18 रानियों के साथ आपने 18 यज्ञ सम्पन्न कराये। जो यज्ञ जिस ऋषि के द्वारा सम्पन्न कराया गया, उसी के नाम पर 18 गोत्रों का नामकरण किया गया। इस प्रकार से अग्रवाल समाज के 18 गोत्रों का प्रचलन हुआ।

अपने राज्य विस्तार के उद्देश्य से आपने वल्लभ गणराज्य से उत्तर दिशा में रोहतक के पास "अग्रोहा" नामक नगर बसाया जो वर्तमान में हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है। इस नगर में पीने के पानी के लिये एक सुन्दर तालाब बनवाया तथा रहने के लिये महल बनवाये। उसी नगर में कुलदेवी महालक्ष्मी का भव्य मंदिर बनाया गया। वहां की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि जो भी कोई व्यक्ति अग्रोहा में बसने के लिये आता था उसे वहां का रहने वाला प्रत्येक परिवार एक ईंट और एक रूपये की सहायता देता था। इस प्रकार से एक सबके लिये और सब एक के लिये की सहकारिता की भावना का सूत्रपात महाराजा अग्रसेन जी ने करके आपसी सहयोग की प्रेरणा दी।

महाराजा अग्रेसन जी की शासन व्यवस्था जनपद पर आधारित थी जो आज की प्रजातंत्रीय प्रणाली से बेहतर थी। राज्य को छोटे छोटे गणों में विभाजित किया हुआ था और प्रत्येक गण का एक प्रतिनिधि जनता के द्वारा चुना जाता था। उन सबका पर्यवेक्षण महाराजा अग्रसेन जी स्वयं वहां जाकर किया करते थे। स्थान-स्थान पर शौचालयों की व्यवस्था, पानी के निकास के लिये नालियां, रास्तों की सफाई की व्यवस्था थी। जनता की सुविधा के लिये धर्मशाला, भोजनालय, प्याऊ इत्यादि के अच्छे प्रबन्ध थे।

महाभारत काल में जब कौरव व पाण्डवों का युद्ध हुआ तो अग्रोहा पर भी कई आक्रमण हुए जिसके परिणामस्वरूप वहां भयंकर अकाल पड़ा। प्रजा त्राहि त्राहि करने लगी। प्रजा के दुख से व्याकुल महाराजा अग्रसेन अपनी रानियों एवं कुछ मंत्रियों व सहयोगियों के साथ एक अच्छे स्थान की खोज में निकल पड़े। कहते है कि जब व्यक्ति धैर्य एवं साहस के साथ अच्छा प्रयास करता है तो उसे सफलता अवश्य मिलती है। महाराजा अग्रसेन जी को भी यमुना नदी के किनारे स्वर्णमयी बालू युक्त अपूर्व छठाओं के मध्य एक स्थान मिला जहां उन्होनें "अग्र" नामक नगर बसाया। इसमें भी आपने विशाल महल एवं मंदिर बनवाया। यह अग्र नगर कोई और नहीं अपितु वर्तमान आगरा ही है। अंग्रेजी में ए जी आर ए होने से यह अग्रा और फिर आगरा हो गया। कहा तो यह भी जाता है कि आगरे का लाल किला और ताजमहल महाराजा अग्रसेन जी के द्वारा ही बनवाये गये थे किन्तु मुगल काल में इनका नाम और स्वरूप बदल कर मुगल शासकों ने अपने अनुरूप कर लिया तथा उस समय के इतिहासकारों ने इतिहास को भी उसी अनुरूप लिख दिया किन्तु अब इसके संबंध में प्रमाण जुटाये जा रहे हैं।

महाराजा अग्रसेन एतिहासिक युग महापुरूष थे जिन्होने एक ईट और एक रूपये के माध्यम से देश में सर्वप्रथम समाजवाद व सहकारिता को मूर्त रूप दिया और प्रजातंत्रीय आधार पर शासन संचालित किया। महाराजा अग्रसेन ही वह प्रथम महापुरूष थे जिन्होने अहिंसा, शाकाहार, आस्तेय, सत्य, चोरी नहीं करना जैसे सिद्धांत प्रतिपादित किये और उन्हें अपने जीवन में उतार कर प्रजा को उनका अनुकरण करने की प्रेरणा दी।

जय भारत। जय अग्रोहा। जय अग्रसेन।

- डॉ. गिरिराज प्रसाद मित्तल
महामंत्री , पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन

श्री गणेश वन्दना

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय, कोटिसूर्य समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरूने देव, सर्व कार्येषु सर्वदा।।

सरस्वती वन्दना

जय हंस वाहिनी, बुद्धि दायिनी, सरस्वती माता।
जय जगत जनन माता, जय महाशक्ति माता।।
हे माता हमारी रक्षा कीजे, विघ्न हों विनाश भिक्षा दीजे, माता........ माता.........
युग युग से है तू हमरी मां, हे सरस्वती माता।
जय जगत जनन माता, जय महाशक्ति माता।।
हे माता हम सब याचक हैं, तू दाता है माता... माता.....
हमरी विनती सुनो, हमें विद्या देवो, हे कल्याणी माता।
जय जगत जनन माता, जय महाशक्ति माता।।
हम बालक छोटे छोटे हैं, अज्ञानी हैं, माता.... माता.....
तुम दयावान, करूणानिधान, हे दयामयी माता।
जय जगत जनन माता, जय महाशक्ति माता।।
जय हंस वाहिनी, बुद्धि दायिनी, सरस्वती माता।
जय जगत जनन माता, जय महाशक्ति माता।।

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

आरती श्री लक्ष्मी जी

ओउम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता॥ ओउम जय..........
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता। मैया.........
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ओउम जय.....

दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता। मैया.......
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥ ओउम जय........
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता॥ मैया........
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥ ओउम जय.....

जिस घर में तुम रहती, सब सद्‌गुण आता। मैया........
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ओउम जय.......
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय पाता। मैया......
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ओउम जय......

शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता। मैया......
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ओउम जय.......
मां लक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। मैया......
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ओउम जय......

श्री लक्ष्मी वन्दना

ॐ महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती (जय अग्रसेन हरे)

जय अग्रसेन हरे, स्वामी जय श्री अग्र हरे।
कोटि कोटि नत मस्तक, सादर नमन करे।
ओम जय श्री अग्र हरे।
आश्विन शुक्ला एकम्, नृप बल्लभ जाये, स्वामी बल्लभ घर जाये।
अग्रवंश संस्थापक, अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे। ओम जय श्री अग्र हरे।
केसरिया ध्वज फहरे, छत्र चंवर धारी। स्वामी छत्र चंवर धारी।
झांझ नफीरी नौबत, झांझ नफीरी नौबत, बाजत तब द्वारे। ओम जय श्री अग्र हरे
अग्रोहा रजधानी, इन्द्र शरण आये। स्वामी इन्द्र शरण आये।
गोत्र अठारह अब तक, गोत्र अठारह अब तक, तेरे गुण गाये। ओम जय श्री अग्र हरे।
सत्य अहिंसा पालक, न्याय नीति समता। स्वामी न्याय नीति समता।
ईंट रुपया की रीति, ईंट रुपया की रीति, प्रकट करे ममता। ओम जय श्री अग्र हरे।
बृम्हा, विष्णु, शंकर, वर सिंहनी दीन्हा। स्वामी वर सिंहनी दीन्हा।
कुल देवी महामाया, कुल देवी महामाया, वैश्य कर्म कीन्हा। ओम जय श्री अग्र हरे।
अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गाये। स्वामी जो सुन्दर गाये।
कहत त्रिलोक विनय से, कहत त्रिलोक विनय से, इच्छित फल पाये। ओम जय श्री.........

- त्रिलोक गोयल

श्री अग्रसेन महाराज वन्दनम्

श्री अग्रसेन महाराज वन्दनम्, मनुज राजन् राजनम्।
हे चक्रवर्ती दृढ प्रतिज्ञं, अतुल रुपम् शोभितम्॥
अखिल विश्वं सुखकरं तुम, प्रजा जीवन जीवनम्।
हे विराट राज विराजनं, महाधीष्म गौरवम्॥
करूणा निधानं विवेकशीलम्, निश्चछल प्रतीत हे शुभम्।
हे अग्र वंश जन्मदानं, वीर पुरुष महानतम्॥
राष्ट्रनायकं चरित्र नायकं, नायक प्रजापालकम्।
हे युग पुरुष लक्ष्मी वरं, अमर अग्रकुल भूषणम्॥
जन प्रणाधारम् मानवम्, कल्याणकारक कारणम्।
हे अभिनन्दीयं वन्दनीयं, श्रेष्ठ भूषण भूषणम्॥
शरद् अगणित दिव्य दीपक तुम अलौकिक पौरुषिम्।
हे प्रकाश पूजम गुण निधानं पूज्य देवम् देवनम्॥

- ओंकारनाथ अग्रवाल

यही मेरी शुभकामना है

ऊषाकाल के सूरज की भांति,
स्वस्थ सुन्दर एवं प्रसन्न रहते हुए,
आप प्रगति की ओर अग्रसर हों,
अग्रसेन जयन्ति पर
यही मेरी शुभकामना है।

सूरज की भांति,
स्वयं देदीप्यमान हों,
करें अंधियारे को दूर,
भरदें उजाला प्रसन्नता का,
यदि दिखे कोई उदास तुम्हें।

सूरज की भांति,
करदें उन्हें भी प्रकाशवान,
जो आयें तुम्हारे सम्पर्क में,
बन जायें आप चुम्बक और पारस,
और बनादें लोहे को सोना,
अग्रसेन जयन्ति के पावन पर्व पर,
यही मेरी अभिलाषा है।

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

अग्रसेन अभिनन्दन गीत

अग्रसेन अभिनन्दन तेरा, तेरी सदा विजय होवे।
हे जनपद के लाने वाले, तेरी सदा विजय होवे॥

अग्रोहा में अग्रचेतना तूने ही फैलाई थी।
तेरे राज्य में किसी चीज की कभी कमी नहीं आई थी॥
अग्रोहावासियों के हित, तूने कष्ट उठाया था।
इन्द्र की परीक्षा पर भी तू नहीं घबराया था॥

हे राष्ट्रचेता, हे अग्रचेता, तेरी सदा विजय होवे।
हे मानव के शुभ चिन्तक, तेरी सदा विजय होवे।

अग्रोहा पर पड़ी विपत्ति, तूने ही ब्रत रक्खा था।
चालीस दिन तक मजदूरों को, पानी खूब पिलाया था॥
ब्रत खोलने की करी तैयारी, भूखा बच्चा आया था।
खुद भूखा रह कर के भी, उसको खाना खिलाया था॥

हे मानव के शुभ चिन्तक, तेरी सदा विजय होवे।
हे जनपद के लाने वाले, तेरी सदा विजय होवे॥

कोल्हपुर गया था वह भी, लक्ष्मी जी के कहने पर।
दुष्ट इन्द्र ने वाण चलाया, तेरी सूनी पीठ पर॥
फिर महीधरजी आये जिनने, तेरी जान बचाई थी।
इन्द्र को दिया सबक और तेरी शादी रचाई थी॥

हे अग्रोहा के अग्रचेता, तेरी सदा विजय होवे।
हे जनपद के लाने वाले, तेरी सदा विजय होवे॥

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

अमर रहे यह नाम तुम्हारा

अमर रहे यह नाम तुम्हारा, हे अग्रोहा के महाराज।
मना रहे हैं तेरी जयन्ति, हम सब मिल कर आज॥
याद करें उस समाजवाद को, जो तुमने अपनाया था।
एक ईंट और एक रूपये का, सबको दान कराया था॥
आई विपत्ति अग्रोहा पर, पाठ पढ़ाया मेहनत का।
संग संग काम कराया तुमने, बांध बनाया पानी का॥
जब ली परीक्षा इन्द्रदेव ने, तनिक नहीं घबराये तुम।
भूख प्यास सब भूल गये और, संग में काम कराये तुम॥
तेरी अमर कथा का हम सब, मिलकर के गुणगान करें।
फहरायें हम तेरी पताका, विश्व में तेरा नाम करें॥
एकत्रित हों सभी अग्रवाल, तुझको करते शीश नमन।
करते हैं अभिनन्दन तेरा, बारम्बार शीस नमन॥

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

वह अग्रवाल कहाता है

यह जाति नहीं यह धर्म नहीं, यह तो एक व्यवस्था है।
एक ईंट और एक रूपये की, अनुकरणीय अनुपम गाथा है॥
अग्रसेन के राज्य में, जांत-पांत का नाम नहीं।
प्रजातंत्र और समाजवाद से, ऊंची नीच का भाव नहीं॥
ज्ञान वान और चरित्रवान, बुद्धि विवेक में है निपुण।
है कर्मवीर और सहन शील, अग्रवाल धनवान विपुल॥
देश भक्त और धर्म परायण, रीति नीति का अनुगामी।
लक्ष्मी उपासक, परोपकारी, दुख सुख का हो सहभागी॥
बात का पक्का, मन का सच्चा, पुरूषार्थी जनसेवक हो।
दयाभाव हो मन में जिसके, गोत्र अट्ठारह में हो जो।
आगे रह कर करे प्रगति, वह अग्रवाल कहाता है॥

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

अग्रसेन की अमर कहानी

अग्रसेन की अमर कहानी, सुनलो अग्रवाल सरदार।
अग्रवाल सरदार, सुनलो अग्रवाल सरदार,
अग्रसेन की अमर कहानी, सुनलो अग्रवाल सरदार।
बल्लभ के घर जन्म लिया था, भड़ौंच प्रताप नगर में।
आसोज शुक्ला एकम को थी, छायी खुशी नगर में॥
25 वर्ष की युवा उम्र में, माधवी संग ब्याहे।
बीलवा के राजा महीधर, की पुत्री को लाये॥
महीधर जी के सहयोग से, इनने राज्य बनाया।
राजधानी अग्रोहा में प्रजातंत्र अपनाया।
अग्रोहा में बसने हेतु जब कोई व्यक्ति आता।
ईंट और स्वर्णमुहर ले, घर व्यापार चलाता॥
शूरसेन थे भाई इनके, पुत्र अठारह होये।
विषाषण पुत्रियों के संग, सारे पुत्तर ब्याहे॥
कुलदेवी लक्ष्मी जी का, वरद हस्त था इन पर।
समाजवाद लाकर के इनने, सबका मन लिया हर॥
सम्राट होने की इच्छा से, राजसू यज्ञ कराये।
पशु बलि देकर के देखो, सतरह पूर्ण कराये॥
अठ्ठाहरवें यज्ञ में ही, इनका मन पलटा था।
पशु बलि नहीं देने का, निर्णय अटल किया था।'
पशु बलि नही देने से यह यज्ञ रहा अधूरा।
इसीलिये हैं अग्रवालों के, गोत्र साढ़े सतरा॥
प्रकट हो गई लक्ष्मी इकदिन, पूजा करते करते।
बूढा हो गया अग्रसेन तू, राज्य पूत्र को देदे॥
आदेश मान महालक्ष्मी का, राजगद्दी दे पुत्र को।
शूरसेन और माधवी संग, चले गये वो वन को॥
दक्षिण में गोदावरी तट पर, ब्रहमसर नगर में।
एक सौ दो की आयु में थे, त्यागे प्राण इन्होंने॥
नवरात्रा के प्रथम दिवस को, भव्य जयन्ति मनावें।
अग्रवाल भाई सब मिलकर, अमर कहानी गावें॥

- डा. राधा गुप्ता

मन चल अग्रोहा धाम

अरे मन चल अग्रोहा धाम, अग्रसेन रजधानी । (मुखड़ा)
अग्रसेन रजधानी, अरे वो तो महापुरूष रजधानी।
अरे मन चल अग्रोहा धाम, अग्रसेन रजधानी।।

तू नगर नगर क्यों भटके, क्यों लोभ मोह में अटके। (अतंरा)
करले अग्रोहा विश्राम, अग्रसेन रजधानी।।

इक मन्दिर भव्य बनायो, श्री अग्रसेन पधरायो।
कुलदेवी को करो प्रणाम, अग्रसेन रजधानी।।

कुल देवी को मंदिर, और राणी सती के दर्शन।
वो है अग्रसेन का धाम, अग्रसेन रजधानी।।

तू अग्रसेन का वंशज, छू ले अग्रोहा का रजकण।
सबसे पहले करो प्रणाम, अग्रसेन रजधानी।।

तू जोड़ जोड़ धन राखै, तेरे कछु काम नहीं आवे।
करले दीन दुखी उद्धार, अग्रसेन रजधानी।।

तू अग्रवाल है दानी, दुनिया में नहीं तेरा सानी।
तूने किया बड़ा उपकार, अग्रसेन रजधानी।।

तू अग्रवाल सरदार, तेरे दया भरी भरमार।
तेरी महिमा अपरम्पार, अग्रसेन रजधानी।।

कोई दीन दुखी जब आवै, तेरे दया भाव हो आवै।
तू है सबका करूण निधान, अग्रसेन रजधानी।।

अग्रोहा में करे निवास, पावै ईंट रूपये का मान।
तुझको बारम्बार प्रणाम, अग्रसेन रजधानी।।

भक्त प्रहलाद ये गावै, तेरी महिमा सबको सुनावै।
तेरी गाथा अमर महान, अग्रसेन रजधानी।।

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

अमन पुजारी जन हितकारी

अमन पुजारी जन हितकारी समता लाने वाले।
ग्रहण सदा सद्‌गुण ही करते सज्जन के रखवाले।।
सेवा सहनशीलता जिनमें हरदम रही सवाई।
नहीं भुलाया कभी दीन को, समझा सबको भाई।।
मनशा रही निरंतर मन में, दुख भाई के काटूं।
बिगड़ी हालत सदा संवारूं, सुख-दुख सबके बांटू।।
रामकृपा से सबके मन में, रहमदिली थी छाई।
जब देखा दे ईंट रूपैया, मदद करी सब भाई।।
कीर्ति फैली अग्रसेन की, जाने आज खुदाई।
जय हो अग्रसेन राज की, जिसकी धन्य कमाई।।

- परमानन्द हिसार वाले

अपने कर्तव्य पथ को संवारी

अग्रवंशी उठो राजवंशी उठो अय दुलारो....... अपने कर्तव्य पथ को संवारो।

शान कैसी रही है तुम्हारी, आन कैसी रही है तुम्हारी।

ज्ञान दाता उठो, देश भ्राता उठो, भय निवारो......... अपने ....

वीर रणवीर पूर्वज हमारे, शत्रुओं के प्रबल बल संहारे।

शूरवीरो उठो, विश्व विजयी उठो, धैर्य धारो....... अपने ....

है चंवर छत्र अब तक हमारा, पूर्वजों ने सदा जिसको धारा।

विपुल ज्ञानी उठो, स्वाभिमानी उठो, न हिम्मत हारो .... अपने.............

वीर माता थी कैसी हमारी, किये जौहर बचा लाज सारी।

देश पुत्रो उठो, आर्य पुत्रो उठो, अब विचारो............अपने..............

क्रूर कायरपना ना दिखाओ, शुभ समन्वय विचारों में लाओ।

सबसे मिल कर चलो, खूब हिल कर चलो, दिल मिलाओ.............अपने...............

✦✦✦

अग्रवाल कहलाता हूं मै

अग्रवाल कहलाता हूं मैं, स्वर्ण लिखा इतिहास है।
मेरी जाति के पुरूषों ने जग में किया प्रकाश है।।
जय जय अग्रसेन। जय जय अग्रसेन।

अग्रसेन थे राजा जिनसे देवराज तक कांपा था।
सत्रह बार सिकन्दर को जिसने भुजबल से नापा था।
जिसके कुल में माँ लक्ष्मी का आंठो पहर निवास है।
अग्रवाल कहलाता हूं में स्वर्ण लिखा इतिहास है।।

देशभक्त पंजाब केसरी, लाला लाजपत राय जहां।
कवियों में सिरमौर हमारे भारतेन्दु और कहां।
गंगाराम कर गये अपना लाखों का विश्वास है।
अग्रवाल कहलाता हूं मैं स्वर्ण लिखा इतिहास है।।

भारत रत्न भगवानदास को, हम सब शीश झुकाते है।
शादीलाल सरीखे जैसे न्यायाधीशों के गुण गाते हैं।
कंवरसेन ने बांध बनाकर झुका दिया आकाश हैं।
अग्रवाल कहलाता हूं मैं स्वर्ण लिखा इतिहास है।

झुनझुनवाला शिवचंद देखा, काटन किंग कहाये हैं।
गूजरमल सा सेठ हमारा मोदीनगर बसाये हैं।
जमनालाल बजाज हमारी जाति की वह साख है।

अग्रवाल कहलाता हूं मैं स्वर्ण लिखा इतिहास है।
प्रयागनरायण नंदलाल को कोई कैसे भूलेगा।
राजा ललित प्रसाद याद कर यह समाज नित फूलेगा।
ऐसे ऐसे नर नाहर के हम चरणों के दास हैं।
अग्रवाल कहलाता हूं मैं स्वर्ण लिखा इतिहास है।

✦✦✦

अमर हमारा अग्रवंश है अमर हमारे गान हैं

अमर हमारा अग्रवंश है अमर हमारे गान हैं।
हम न रूकेंगे हम न झुकेंगे, अग्रसेन सन्तान हैं।

जाति हमें प्राणों से प्यारी उसकी सेवा धर्म हमारा।
अग्रसेन पथ वरण करेंगे, यह सच्चा कर्तव्य हमारा।।
इसका हम उत्थान करेंगे जिसकी हम संतान हैं।
अमर हमारा अग्रवंश है अमर हमारे गान हैं।।

हम चन्दा बन कर चमकेंगे, हम सूरज बन कर दमकेंगे।
होंठ होंठ की हंसी बनेंगे, हंसा हंसा कर हंस लेंगे।।
अग्रवंश अभिमान बनेंगे, अग्रवाल सन्तान हैं।
अमर हमारा अग्रवंश है अमर हमारे गान हैं।

अग्रसेन पर चंवर डुलाते उसके चांद सितारे हैं।
नई रोशनी नई हवा में, हमने प्राण संवारे हैं।।
हम फूलो से मुस्कायेंगे, फूलों सी मुस्कान है,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं।

साम्य और समता लायेंगे, सभी विषमता हर लेंगे।
दुख-दारिद्र मिटाकर सबका अग्रसेन पथ वर लेंगे।
अग्रसेन के स्वर गायक हम, अग्रसेन की शान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं ।।

अग्रसेन की विजय पताका, प्राणों से भी प्यारी है।
नई उमंगों में भर कर हम, करते सब रखवारी है।
इसकी शान न जाने देंगे, शिव संकल्पी आन है।
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं।।

✦✦✦

यह कौम है अगर वालों की

यह कौम है अगर वालों की, जांबाजों की मतवालों की।
इस कौम के यारो क्या कहने, साकार करे यह हर सपने।
यह परम दयालु उपकारी, वैष्णवधर्मी शाकाहारी।
ये विवेकशील है दानी है, और बुद्धिमान लासानी है।।

इनमें ज्यादातर व्यापारी हैं और जमा लई साहूकारी है।
उद्योगपति भी हैं इनमें और तकनीकी के हस्ती हैं।।
पुरूषार्थी होते अग्रवाल, पत्थर से पानी लें निकाल।
मिट्टी भी सोना बन जाती जब इनके हाथों में आती।
कैसी भी हो इण्डस्ट्री, इनकी हो जहां कृपा दृष्टि।
सूरज सी चमकने लगती है, फूलों सी महकने लगती है।
यह कौम कलेजे वालों की, और बुलन्द हौसले वालों की।
इस कौम के यारो क्या कहने, साकार करे यह हर सपने।।

जग में ऐसा स्थान नहीं, जहां अग्रसेन सन्तान नहीं।
पर नहीं संगठन है इनमें, यह कमी अखरती है मन में।
ज्यों नमक बिना बे-स्वाद साग, ज्यों बिन गुलाल खलती है फाग।
जो एक सूत्र में बंधने की और देश जाति पर मिटने की।
यदि प्रबल भावना जग जाये तो प्राप्त अमरता हो जाये।
इनका भविष्य उज्जवल अवश्य, मजबूत संगठन भी होगा।
यह शासन में भी आयेगी और नई क्रांति लायेगी।
यह कौम है हिम्मत वालों की और शांतिप्रिय परवानों की।
इस कौम का यारो क्या कहने, साकार करे यह हर सपने।।

✦✦✦

ध्वजा हमारी केसरिया

ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।
भारत के कण-कण में अंकित, गौरव ज्ञान हमारा है।।
हम हैं वहीं जिन्होंने सदियों, तक साम्राज्य चलाये थे।
हम हैं वहीं जिन्होंने बृह्मा, विष्णु से वर पाये थे।।
हम से सिकन्दर तो क्या, देवराज तक हारा है।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।।
कौन नहीं परिचित है जग में, अग्रवंश संतानों से।
दिये हुए वचनों को पाला, बढ़ कर अपने प्राणों से ।।
सत्य अहिंसा प्रेम वीरता, न्याय धर्म उर धारा है।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।।
छत्र चंवर नौवत निशान के, हम ही केवल अधिकारी।
भाट गा रहे धन वैभव की, गौरव यश महिमा भारी।।
आज जाति के लिये हमारा ये ही कौमी नारा है।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।।

- मुरारीलाल बंसल

अग्रसेन है इसीलिये

आगे सबसे रहे सदा जो, अग्रसेन कहलाता है।
अग्रसेन हे इसीलिये युग-युग से पूजा जाता है।।
वह अपने युग का निर्माता, निर्माणों में व्यस्त रहा।
संघर्षों से तूफानों से लड़ने का अभ्यस्त रहा।।
सामाजिक चेतना जगाकर जीना सिखा दिया उसने।
फटे दर्द को स्नेह सूत्र से, सीना सिखा दिया उसने।।
कमजोरों को मिला सहारा, आसूं को मुस्कान मिली।
भटके हुए पथिक को मंजिल, की सच्ची पहचान मिली।।
महापुरूष वह उसकी महिमा, को कवि नित दोहराता है।
अग्रसेन है इसीलिये युग-युग से पूजा जाता है।

इस महान राजा के वंशज, स्वाभिमान में पले हुए।
अग्रगण्य हैं सभी तरह से देश प्रेम में पले हुए॥
व्यापारिक व्यवसाय वृत्ति में, निपुण निराले दक्ष मिले।
राजनीति में सबसे आगे, बढ़ने को प्रत्यक्ष मिले॥
अग्रोहा की परम्परा को आज अगर मान्यता मिले।
है मुझको विश्वास देश का, हर मुरझाया फूल खिले॥
उसके अमर उसूलों का स्वर, वातावरण सुनाता है।
अग्रसेन है इसी लिये युग-युग से पूजा जाता है॥

एक ईंट के साथ एक मुद्रा, जब अर्पित होती थी।
मानव के हित मानव की, भावना समर्पित होती थी।
वह समाजवादी युग का, पहला आवाहन लगता है।
अग्रसेन का युग के प्रति, पहला सम्बोधन लगता है।
उसी त्याग की और तपस्या, की अब बहुत जरूरत है।
वर्तमान युग में तो उसका, निकला नया मुहुरत है।
लक्ष्मी पुत्रो सुनो समय तुम, को आवाज लगाता है।
अग्रसेन है इसीलिये युग-युग से पूजा जाता है॥

जयन्तियां जो मना रहे हैं, उनसे इतना कहना है।
कब तक तुमको अलग-अलग हो विपदाओं को सहना है।
उठो समय के स्वर पहचानो, संकल्पों का मौसम है।
बदली हुई परिस्थितियों में, मन में यह कैसा भ्रम है।
मन में लो मजबूत इरादे, परिवर्तन के साथ चलो।
गिरे हुए की बांह पकड़ लो, लेकर अपने साथ चलो।
समय उसी के साथ चले जो अग्रसेन बन जाता है।
अग्रसेन है इसीलिये युग-युग से पूजा जाता है॥

- कृष्ण मित्र

अग्रवाल के नाम से है यह विपुल समाज

अग्रवाल के नाम से है यह विपुल समाज
पूरे भारत वर्ष में विद्यमान है आज॥
चला रहा जो देश में बड़े बड़े उद्योग।
अर्थ व्यवस्था में परम जिसका है सहयोग॥

आदि पुरूष उसके रहे, अग्रसेन महाराज।
वर्ष सहस्त्रों पूर्व था, अग्रोहा में राज॥
जिनके शासन में रहे, सभी सुखी सम्पन्न।
कोई निर्धन था नहीं, और न कोई विपन्न॥

सदा नवागत की रही, घर पीछे प्रत्येक।
एक ईट के साथ में, मिलती मुद्रा एक॥
ताकि बनालें ईंट से वह अपना घर-द्वार।
और करे आनन्द से मुद्रा से व्यापार॥

समाजवाद का देखिये, कितना सुन्दर रूप।
सर्वोदय का समझिये, इसको एक स्वरूप॥
अग्रोहा अधिराज का उत्तम राज्य प्रबन्ध।
वह मिसाल बतला रही, सौहार्द भ्रातृ-संबंध॥

वैभव से परिपूर्ण अति, रहा अग्रोहा धाम।
नागलोक तक गूजंता, अग्रसेन का नाम॥
पुत्र अठारह वीर थे, उनके पावन अंश।
जिसके पुण्य प्रताप से, हुआ वृद्धिगत वंश॥

वाणिज्य कला साहित्य कृषि, शिक्षा अनुसंधान।
सैन्य सुरक्षा यांत्रिकी, राजनीति विज्ञान॥
प्रत्येक क्षेत्र में कार्यरत, अग्रसेन संतान।
सर्वत्र समुन्नत पा रही, उत्तरोत्तर मान॥

बढ़े और भी विश्व में, हो समाज का नाम।
अग्रवाल प्रत्येक में, करे भाव ये काम॥
अग्रसेन चलते रहे, लेकर जो आदर्श।
हमसे जितना बन सके, पालें उसे सहर्ष॥

अनुकृति ही सच्ची सदा, श्रंद्धांजलि बेचैन।
महापुरूष की आत्मा तब ही पाती चैन॥

- द्वारका प्रसाद अग्रवाल, बेचैन

अग्रसेन के वंशज हैं हम अग्रवाल कहलाते है

अग्रसेन के वंशज हैं हम, अग्रवाल कहलाते हैं
संघ एकता में शक्ति है, यह बात सभी बतलाते हैं।
नहीं पूछता कोई जग मे जिसके पीछे शक्ति नहीं,
संगठन से ही बल मिलता हे, और कोई तो युक्ति नहीं॥

अपनी शक्ति को पहचानो, धन, यश, विद्या पास है,
ह्रास हुआ है नैतिकता का, खोया निज विश्वास है।
जाति धर्म और छुआछूत में, अलग-थलग सब पड़े हुए,
ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की, दीवार बनाकर खड़े हुए।

सोई हुई है चेतना सबकी, आया समय जगाने का।
छोटी छोटी बातों में अब, वक्त नहीं है गंवाने का।
वही समाज आगे बढ़ता है, नारी को जो दे सम्मान,
आधी शक्ति खो देने से, नहीं होते फिर पूरे काम॥

मानवता का पाठ सीख लो, गर तुम मानव कहलाते,
पूजे जाते वही जगत में, सब के घाव जो सहलाते।
अलग-थलग वर्गों में बंट कर, वैश्य समाज का हुआ हनन,
संगठित होकर एक मंच पर, समस्याओं पर करो मनन॥

- चन्दन बाला जैन,

अग्रवालो उठो वक्त खोओ नहीं

अग्रवालो उठो, वक्त खोओ नहीं।
बहुत सोये हो, गफलत में सोओ नहीं॥
देश अपने में, जिनका अटल राज्य था।
वैश्य जाति के, सर पर जो सरताज था।
थाती उनसे मिली, ये भुलाओं नहीं।
अग्रवालो उठो, वक्त खोओ नहीं॥

मात लक्ष्मी का, हमको यह वरदान है
एकता से जो रहता, वह धनवान है
धन के चक्कर में, हम आप ऐसे पड़े।
क्या थे क्या हो गये, भाई-भाई लड़े।
फूट के बीज, अब और बोओ नहीं।
अग्रवालो उठो, वक्त खोओ नहीं।

क्या कमी है, विधाता ने सब कुछ दिया।
धन दिया, बल दिया, बुद्धि दी गुण दिया।
कमी है बड़ी यह, कमी खल रही।
आपसी फूट अपने ही, घर पल रही।
फूट जड़ से उखाड़ो रे, सोओ नहीं।
अग्रवालों उठो वक्त खोओ नहीं॥

अग्र के वंशजो, अग्र के वंशजो।
अग्रगामी सदा, अब भी आगे बढ़ो।
छोड़ दो दुश्मनी, मित्रता सीख लो।
खो दिया जो उसे बढ़कर हासिल करो।
अपनी करनी पै अब आगे रोओ नहीं।
अग्रवालों उठो वक्त खोओ नहीं॥

दान देने की हम, सब में ताकत बड़ी।
भाभाशाह से, जुड़ी है हमारी कड़ी।
जिसके सहयोग से, सारी सेना लड़ी।
उनके वंशज है, फिर फूट कैसे पड़ी।
फूट के बीज आगे को बोओ नहीं।
अग्रवालो उठो वक्त खोओ नहीं॥

- राजकुमार अग्रवाल "वृद्ध"

अजेय अग्रबन्धुओ। बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अजेय अग्र बन्धुओ। बढ़े चलो, बढ़े चलो।
सुधीर धीर बन्धुओ । बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

रे सूपत बन्धुओ, स्वजाति मां पुकारती।
रूढ़ रूढ़ियां घुसी, निर्लज्ज नीच स्वार्थी।
खदेड़ दो खदेड़ दो, बढ़े चलो, बढ़े चलो। अजेय अग्र..............

विमल प्रतीक हाथ है, सदैव सत्य साथ है।
बढ़ो असीम शौर्य से, सुकीर्ति जीत हाथ है।
रूको नहीं झुको नहीं, बढ़े चलो बढ़े चलो। अजेय अग्र..................

इन्कलाब कर उठो, स्वजाति पर मर मिटो।
आन वान शान पर एक हो सभी जुटो।
नौजवान मोड़ लो, बढ़े चलो, बढ़े चलो। अजेय अग्र............

तेजवान प्राण हो, पीड़ितो के त्राण हो।
धैर्य शक्तिवान हो, प्रबुद्ध सावधान हो।
रक्तवान रक्त दो, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥ अजेय अग्र...............

बाधाओं को चीर दो, गंगाजल सा नीर दो।
मातृभूमि जाति को, प्राणवान वीर दो॥
अग्रसेन संतान हो, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥ अजेय अग्र..............

- कल्याणमल, झण्डे वाला

अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ जायें

अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें।
दृढ संकल्प हमारा है यह, स्वयं लक्ष तक चल पायें॥
बाधाएं कब रोक सकी हैं, बढने वालों की राहें,
कौन दुराशा दबा सकी है, सबल चित्त की शुभ चाहें।
देख रही हैं राह सफलता, लक्ष्य गीत मिल सब गायें,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें॥

मिटा सका है कौन कभी, अन्तः प्रेरित उत्साहों को,
बांध सके कब धूमिल बन्धन, उमड़े हुए प्रवाहों को।
तरूण-चरण चल पड़े जिधर ही, लक्ष्य स्वयं दौड़ा आये,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें॥

विकट विरोधों के कारण हम, बिल्कुल कभी न घबराये,
पद लिप्सा के प्रबल मोह में, कभी न हम पड़ने पायें,
एकाचार-विचार एकता, से सब जन-मन खिल जाये,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ जायें॥

तोड़ गिरायें जीर्ण-शीर्ण सब, रूढिवाद की दीवारें,
परम्परागत झूंठी शानें, सभी मिटाये मिल सारे।
नवयुग के इतिहास पृष्ठ में, अपना नाम लिखा पायें,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें॥

एक रूपया और एक ईंट दे, अग्रसेन पथ अपनायें,
कर कल्याण समाज देश का, जन-जन जीवन विकसायें।
मिटा विषमता शांति निकेतन, अग्रवशं को चमकायें,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें॥

- कल्याणमल गोयल "झण्डेवाला"

जलती रहे मशाल

जलती रहे मशाल हमारी जलती रहे मशाल।

अंधकार फैला है काला, हर कुटिया में करें उजाला।

जाति प्रेम की फेरें माला।

संघ संगठन सभी दिशा में, बने ज्योति की माल

हमारी जलती रहे मशाल। जलती रहे मशाल हमारी..........

भेदभाव की कड़िया तोड़, रुढ़ रुढ़ियों का सिर फोड़े।

निर्माणों से जीवन जोड़े,

मानवता का झण्डा लहरा, गावें गीत विशाल। हमारी जलती...........

इन्कलाब कर सब उठ जायें,

आन-बान पर मर मिट जायें, नौजवान आगे बढ़ जायें,

गली-गली राहों-चौराहों, पहन विजय की माल। हमारी जलती.............

बिन दहेज कन्या अपनाये, विधवाओं को गले लगायें,

दीनबन्धु के दुःख मिटायें,

अग्रवंश में रहे फूलती, मानवता की डाल। हमारी जलती..............

- कल्याणमल झण्डेवाला

अग्रवंश के मानव अपनी, मानवता में रस घोलो

अग्रसेन के मानव अपनी मानवता में रस घोलो।
अग्रवाल कहलाने वाले, अग्रसेन की जय बोलो॥

फूट फैलती अरे अरे ओ, खोलो अपनी आंखो को।
इसी फूट ने दुनिया में, बरबाद किया है लाखों को।
प्रेम एकता के प्रांगण में, वाणी से अमृत घोलो।
अग्रवंश के मानव अपनी मानवता में रस घोलो।

नैतिकता ही शस्त्र तुम्हारा, सत्य तुम्हारा नारा है।
सदाचार ही कर्म तुम्हारा, ज्योतित एक सितारा है।
ब्लैक, मिलावट, तोल-माप में, झूंठी वाणी मत बोलो।
अग्रवंश के मानव अपनी, मानवता में रस घोलो॥

दीनों का शोषण करने से, ज्यादा गुत्थी उलझेगी।
एक रुपया और एक ईंट, देने से गुत्थी सुलझेगी।
झोंपड़िया उजड़ा कर, ऊंचे महलों में मत डोलो।
अग्रवंश के मानव अपनी, मानवता में रस घोलो।

ओ धनवानो। दीन जनों का, शोषण करना तुम छोड़ो।
देख-देख रफतार जमाने, की, अपना रुख मत मोड़ो।
पूंजी-पतियों। सम्भलो अब तो, गांठ हृदय की सब खोलो।
अग्रवंश के मानव अपनी, मानवता में रस घोलो॥

वर-विक्रय, कन्या विक्रय कर, जीवन में विष मत घोलो।
अन्य रुढ़ियों परम्परा पर, चल समाज को मत घोलो।
नैतिकता की सुर-सरिता में, अपने पापों को धोलो।
अग्रवंश के मानव अपनी, मानवता में रस घोलो॥

- कल्याणमल झण्डेवाला

दिन में फेरे शुरु करो

अग्र बन्धुओ उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो।
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन के फेरे शुरु करो॥
बुरे कर्म जितने भी हैं, वो अंधियारे में होते हैं।
आतिशबाजी शराब भंगड़ा, कुकर्म की जड़ होते हैं॥
लड़के लड़कियां संग संग नाचें, होश हवास सब खोते हैं।
चरित्र हीनता फैलाकर वो, कुल का नाम डुबोते हैं॥
अपने हित की बात जरा, कुछ हृदय में मंजूर करो।
अग्र बन्धुओं उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो॥

समय दिया है आठ बजे का, कर इन्तजाम सब थकते हैं।
नौ, दस, ग्यारह बजे देख कर, लोग निराश लौटते हैं॥
भंगड़ा करते आधी रात में, खाना ठण्डा खाते हैं।
बदहजमी हो जाती और, वे बीमार पड़ जाते हैं॥
अब तो यह गन्दे रिवाज, जड़ से चकनाचूर करो।
अग्रबन्धुओं उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो॥

दिन के फेरे करने से, एक नया हर्ष छा जाता है।
आतिशबाजी और लाईट का, धन अपव्यय बच जाता है॥
रात ठहरने के झंझट से, हर एक छुट्टी पाता है।
बिस्तर कपड़ों की तैयारी का, बोझ दूर हो जाता है॥
ऐसी अच्छी बातों का तो, खूब प्रचार जरुर करो।
अग्रबन्धुओं उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो॥

सुबह को जाना, शाम का आना, दिन का विवाह रचाने में।
दिन के फेरे स्वयंवर से, होते थे पूर्व जमाने में॥
सौ झंझट और खर्चा होता, बारात को रात ठहरने में।
वर और कन्या पक्ष सुखी हैं, कार्य शीघ्र निपटाने में॥
शुभ काम में देरी क्या बस, सबको ही मजबूर करो।
दिन के फेरे अपनायें सब, आनंद से भरपूर करो।
अग्रबन्धुओं उठो जरा और रुढ़िवादिता दूर करो।
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन के फेरे शुरु करो॥

- मनोहर लाल

आने वाला मनमोहक कल, हमको रहा पुकार

सजा रहा है उनके सुन्दर सपनों का सिंगार
बसा रहा है आदर्शों का एक नया संसार। अग्रसेन परिवार।
अग्रोहा से दूर-दूर हम अग्रवंश के वासी,
बसे जहां भी कर्मठता के बने रहे विश्वासी।
सेवा करते समाज की, विश्व-शांति प्रत्याशी,
दिखा रहे अंधियारी में, आशा की पूरनमासी।
हटा निराशा, हमें मिटाने, फैले हुए विकार।
स्नेह सदन में भेदभाव के कहीं न होते द्वार। अग्रसेन परिवार।
अग्रवंश के भाई मिल कर, सेवा करने जागे।
हिलमिल कर हम जोड़ रहे हैं टूटे फूटे धागे।
करते हैं सेवा समाज की, अपना सब कुछ त्यागे।
एक-एक पग रखकर हम, बढ़ पाये कितने आगे।
श्रम की कलियां चुन-चुनकर, हम बना रहे हैं हार।
श्रम के आगे झुक जाता हैं, भ्रम का अत्याचार। अग्रसेन परिवार
कर्मठ उठे हैं डटकर, जागे हैं व्यापारी।
आगे आये श्रमिक, धनिक, आगे आये अधिकारी।
अग्रवाल परिवार, जाति गौरव पर है बलिहारी।
सींच रहे हैं जो फुलवारी, हम उनके आभारी।
भेदभाव का नाम मिटाकर, हमें बढ़ाना प्यार।
ऊंच-नीच को मिटा, हटाना हमको भ्रष्टाचार। अग्रसेन परिवार।
इस समाज के सपनों को, जो आये सत्य बनाने।
इस समाज के सरस साज की, आये झलक दिखाने।
बड़े खड़े है छोटों को, ऐसा आदर्श सिखाने।
जहां नहीं पथ पर कांटे हैं, बिखरे सुमन सुहाने।
आने वाला मनमोहक कल, हमको रहा पुकार।
हमें हटानी कुरीतियों की फौलादी दीवार। अग्रसेन परिवार

-सरस्वती कुमार दीपक

अग्रवालों ! अग्रता की बात सोचो !

क्षुद्रतम कुविचारवश,
वंश मर्यादा न तोड़ो
अग्रवालो अग्रता की बात सोचो।

सम्पदा है जो सभी की,
श्रेष्ठतम गौरव विगत की,
आपसी प्रतिशोध लालच,
लोभ के वश,
जाति उपजाति को खण्ड-खण्ड
होने से रोको।
अग्रवालो, अग्रता की बात सोचो।

आज का युग
जा रहा किस ओर देखो,
आपसी मतभेद छोड़ो
विश्व से सम्बन्ध जोड़ो
एक ईंट और एक रुपये का
फिर से शंखनाद फूंको,
समाजवाद की,

सहयोग की,
अपनत्व की,
प्रगति की,
उस नीति को न भूलो !
अग्रवालों ! अग्रता की बात सोचो।

छीन कर खा रहे,
जो टुकड़े किसी के,
उनकी भी क्या जिन्दगी है,
इन्सानियत की बात सोचो।
अग्रवालो अग्रता की बात सोचो।

धर्म को ईमान को,
भाई को और देश को
न तुला पर आज तोलो।
तोलना है यदि तुम्हें तो
दहेज को, दीनता को
भुखमरी और गरीबी को,
पहले और आज के बीच तोलो।
अग्रवालो, अग्रता की बात सोचो।

- नरेन्द्र मोहन अग्रवाल, "पागल"

मेरे कवि के लिये समस्या, बनी जयन्ति आज की

मेरे कवि के लिये समस्या, बनी जयन्ती आज की,
करें अर्चना अग्रवाल या, अग्रसेन महाराज की।

अग्रसेन यदि भारत मां का, एक अनूठा लाल है,
उसकी सफल सर्जना का, फल ही तो अग्रवाल है।
अखिल विश्व में जिसके यश की, फैली स्वर्णिम धूप है,
कहीं धर्मशाला, शिवालय, कहीं मंदिर कहीं धूप है।
अस्पताल, गौशाला करते, सेवा सभी समाज की,
करें अर्चना अग्रवाल या अग्रसेन महाराज की।।

अग्रसेन यदि नाविक हैं तो, अग्रवाल पतवार है,
जिसके बलशाली कन्धों पर, देश धर्म का भार है।
तन-मन धन सर्वस्व समर्पित, लिये उठाया भार है,
भामा, जमनालाल, लाजपत दिखा रहे संसार को
कैसे रक्षा की जाती है मातृभूमि के लाज की,
करें अर्चना अग्रवाल या अग्रसेन महाराज की।।

जहां राष्ट्र निर्माण हेतु, धन अर्जन का सवाल है,
सबसे अग्रिम पंक्ति में, सन्नध्य सदा अग्रवाल है,
अपनी कर्मठता उद्यम से, फैलाया व्यापार है,
अर्थ व्यवस्था की प्रगति का, बना मुख्य आधार है,
अथक कर्मयोगी को चिन्ता, नहीं तख्त और ताज की,
करें अर्चना अग्रवाल या, अग्रसेन महाराज की।।

अभीं दूर है मंजिल बाकी, काफी लम्बी डगर पड़ी है,
निज समाज के मुख अब भी बाधाओं की बाड़ खड़ी है।
विलासित पाखण्ड, अपव्यय और दहेज अब होंगे दूर,
युवती विधवा नहीं रहेगी, उन्हें मिलेगा नव-सिन्दूर।
तभी समस्या हल हो जायेगी, स्वयं ही कवि राज की,
करें अर्चना अग्रवाल या, अग्रसेन महाराज की।।

- रमेश चन्द्र मिश्र, अंगार

जयति अग्रध्वज ब्योम बिहारी

जयति अग्रध्वज ब्योम बिहारी । केसरिया रंग पर बलिहारी ॥

इस ध्वज को मन से फहरायें । समाजवाद का नांद गुंजायें ॥
उठे राष्ट्र सब मिल कर गायें । जीवन अपना सफल बनायें ॥
उद्यम कर उद्योग चलायें । कृषि गाय वाणिज्य बढायें ॥
यही धर्म धर वैश्य कहायें । अग्रसेन के यश गुण गायें ॥
विद्या मंदिर क्षेत्र चलायें । वेद पढ़े और यज्ञ रचायें ॥
जनहित द्वारा नाम कमायें । प्रेरणा इस ध्वज से पायें ॥
अग्रध्वजा के नीचे आयें । बिखरी जाति संगठित पायें ॥
तन मन धन से इसे उठायें । तब हम अग्रवाल कहलायें ॥
जयति अग्रध्वज ब्योम बिहारी । केसरिया रंग पर बलिहारी ॥

- वैध निरंजन लाल गौतम

(हे ध्वज । बारम्बार प्रणाम ।)

हे ध्वज। बारम्बार प्रणाम। तुमको बारम्बार प्रणाम॥
केसरिया धरती ये तेरी, और चमकता दिनकर।
अग्र जातिका यूं ही फैले, सौरभ प्रकाश हो घर घर॥
अट्ठारह गोत्रों की द्योतक, ये अट्ठारह किरणे।
अंकित मध्य ईट और मुद्रा, नीति हमारी वर्णे॥
अग्रवंश की अमर पताका, सुन्दर ललित ललाम।
हे ध्वज बारम्बार प्रमाण, तुमको बारम्बार प्रणाम॥

- राजेन्द्र प्रसाद गर्ग, राजेश

ध्वजराज तुम्हें शत शत प्रणाम

जीवन के शाश्वत मूल्यों के हे चिर प्रतीक तुमको प्रणाम। ध्वजराज तुम्हें शत शत प्रणाम।
हे अग्रवंश यश विस्तारक, समता की ज्योति दीप्ति लिये।
अनुराग त्यागयुक्त वैभव में, सहयोग अहिंसा सत्य लिये ॥
केसरिया अरूणिम आभा में, जीवन की ज्योति जगी जबसे।
नव सृष्टि देखती जब शिशु सी, पालन की कीर्ति पगी तब से॥
सुख शांति बहाती रस धारा के हे प्रतीक तुमको प्रणाम ॥ ध्वजराज तुम्हें..........
अग्रोहा कीर्ति दिवाकर हे, पथ नूतन दिखलाया तुमने।
रूपया ईंटों की परिपाटी का, वैभव यश पाया तुमने॥
इतिहास विधाता के कर में, पथ-ज्योति बनो हे ज्योति चरन।
लक्ष्मी के पूतों के बल हे, लक्ष्मी का हो फिर आव्हान।
दुर्वृति दलन हे वीतराग, हे अनुरागी तुमको प्रणाम।। ध्वजराज तुम्हे......

- बाबू लाल अग्रवाल

अग्रपताका तेरी जय हो।

श्री लक्ष्मी माता, सब सुख दाता, अग्रवंश कुल देवी।
अतुलित बलिहारी, मंगलकारी, अग्रसेन तब सेवी॥
ग्रह अति उत्तम, आश्विन एकम, नृप बल्लभ घर आये।
सेवक सुख पाये, सुर हर्षाए, जन मन मोद मनाये॥
नगरी अग्रोहा, जन मन मोहा, हाट बाट कर सोहा।
मन में भक्ति, तन में शक्ति, इन्द्र हरा कर द्रोहा॥
हारे यूनानी, जगने मानी, जिनकी कलम कटारी।
राजन के राजा, बजते बाजा, छत्र चंवर अधिकारी॥
जय माधवी रानी, जय गुणखानी पुत्र अठारह पाये।
की ऐसी किरणे, नागिने वरणी दो दो बघुएं लाये।
जय दानीमानी अमर कहानी, सत्य अहिंसक न्यायी।
यह स्तुति गाये, वह वर पाये, पद त्रिलोक सिर नाई।

- त्रिलोक गोयल

गौरवशाली अग्रवशं का ध्वज केसरिया नमो नमो

गौरवशाली अग्रवंश का ध्वज केसरिया नमो नमो।
युग निर्माता अग्रसेन की, संघ-निशानी नमो नमो॥
त्याग तपस्या का केसरिया, यश गाथा लहराता है।
अग्रवंश का बच्चा-बच्चा, झूम झूम फहराता है॥
अष्टादश किरणों का गोला, गोत्र प्रमाण बताता है।
एक रूपया और एक ईंट मध्य बन्धु भावना गाता है।
अग्रवंश के इस गौरव की गौरव गाथा नमो नमो ।
गौरवशाली अग्रवंश का, ध्वज केसरिया नमो नमो॥

युग के नवजीवन में नव, पथ का निर्माण कराता है।
एक रहो व नेक बनो का, शुभ सन्देश सुनाता है॥
अग्रसेन की विमल कीर्ति यह, घर घर में फैलाता है।
समता साम्य समाज वाद का पाठ हमें सिखलाता है॥
मातृभाव के इस प्रतीक की अग्र-भावना नमो नमो।
गौरवशाली अग्रवंश का ध्वज केसरिया नमो नमो ॥

आओ आओ करें प्रतिज्ञा, इसे न झुकने देंगे हम।
सिर जाये पर आन न जाये, हंस-हंस कर बलि देंगे हम ॥
इसकी छाया में जन-जन का, मिल कल्याण करेंगे हम।
शांति निकेतन अग्रसेन के, सपने सत्य करेंगे हम॥
अग्रोहा के ज्योतिर्मय की, निर्मल आभा नमो नमो।
गौरवशाली अग्रवंश का, ध्वज केसरिया नमो नमो॥

- कल्याण मल गोयल, झण्डेवाला

अग्रसेन के अग्रवंश की जो महिमा हैं गाते

अग्रसेन के अग्रवंश की जो महिमा हैं गाते।
नव समाज में नई रोशनी जनता में फैलाते॥
सत्य अहिंसा कर्मशीलता का त्रिनगर बसायें।
दीन दुखी जो बन्धु हमारे उनके दर्द मिटाएं॥
हिम्मत से जो आगे बढ़ता अग्रवाल कहलाता।
सदा स्वच्छता नम्रभावना, सद्गुण है दर्शाता।
स्वयं भी जीता है शुभ जीवन, औरों को सिखलाता।
अग्रसेन का परम प्यारा, सबकी आशिष पाता॥

रीति और रिवाजों में जो सोच समझ कर चलता।
अपने से ऊपर वालों को देख के नहीं मचलता॥
धर्म-हृदय, मानवता प्रेमी, गौ ब्राम्हण का प्यारा।
अग्रसेन का धर्म पूत हो मिलता उसे किनारा॥
अत्याचारों से टकराए नशे खोरियां छोड़े।
बन्धे कुरीति के बन्धन को, हिम्मत से जो तोड़े।
लेन देन के लालच में फंस, कहीं न बिछुड़ें जोड़े।
यह दूल्हा है सौ हजार का कहीं न अटकें रोड़े॥

अग्रोहा में अग्रसेन की फिर से याद मनाएं।
अग्रवाल का मानस मंदिर सुन्दर स्वच्छ बनायें॥
अग्रसेन की अग्रोहा में फिर से ध्वजा फहरायें।
ईंट रुपैया वाली बातें सबको याद दिलायें।
कहीं रहे घूमें जग सब अपनापन दिखलायें।
भाई परमानन्द पुकारे जग में आदर पायें॥

- भाई परमानंद जनकवि

अग्रसेन अष्टक

अग्रसेन महाराज चरित शुभ, गंग जमुन की धार।
बारंबार नमन अभिनन्दन, वन्दन बारम्बार।।

पूज्य पिता श्री अग्रसेन के, बल्लभ नाम सुहाए।
शूरसेन से बन्धु सुपावन, पाकर मन हर्षाए।।
मित्रा, चित्रा, शुभा, सुशीला, शांता, सिखा, भवानी।
सुन्दरवती, शुभा, रम्भा, रवि, सखी, माधवी, मानी।।
रजा, चरा, सरसा, रुशिरा थी, रानी सुभग सुखार।
बारम्बार नमन अभिनन्दन, वन्दन बारम्बार।।

अष्टादश थी महारानियां, शोभा सुखद सुहानी।
रुप गर्विता परम सुन्दरी, अग्रसेन मन भानी।।
तीन तीन शुभ पुत्र रत्न संग, जन्मी इक इक कन्यां।
महारानिया पा संताने, हुई मनहीमन धन्या।।
किये अष्टदश यज्ञ, अष्टदश ऋषि द्वारा शुभकार।
बारम्बार नमन अभिनन्दन, वन्दन बारम्बार।।

ऋषि अठारह के नामों पर, गोत्र अठारह पाये।
बंसल, कंसल, सिंहल, मंगल, जिंदल, तिंगल भाये।।
गोयल, गोयन, गर्ग, मधुकुल मित्तल बिन्दल सोहे।
एरण, धारण, तायल, नांगल, कुच्छल भंदल मोहे।।
अग्रवाल सम्मेलन से, सर्व हुए स्वीकार।
बारम्बार नमन अभिनन्दन, वन्दन बारम्बार।।

अग्रसेन थे राजनीति निष्णात, अपरिमित ज्ञानी।
शक्तिवान विद्वान विचारक, धर्म धुरन्दर मानी।।
धन-जन से सम्पन्न सुखी थे, कीर्तिवान शुभ माना।
लोकतंत्र था राजतंत्र का, दृढ़ आधार सुहाना।।
कीर्ति नृप अग्रसेन का, चहुंदिस हुआ प्रसार।
बारम्बार नमन अभिनन्दन, वन्दन बारम्बार।।

\- चन्द्रकुमार "सुकुमार"

ऐसो ठाट वाट वारौ अग्रसेन हमारो है

केसरिया ध्वज हाथ, पगड़ी कसूमल माथ,
अंगूरी अंगरखा पै कसना रतनारा है।
शरबती दुपट्टा में म्यान आसमानी कसी,
मोती सी धोती का काला किनारा है।।
हरी हरी मखमली जूतियां जरी का काम,
चान्दनी गलीचा पै, सलमा सितारा है।
दूधिया चंवर, जाके अठारह कंवर,
ऐसो ठाटवाट वारो, अग्रसेन हमारो है।

राजन के राज रहे, शीश पर ताज रहे,
मूंठन की लाज रहे, साज सजे सारा है।
संग में ममाज रहे, भाट जसराज रहे,
जाति पर नाज रहे, सबको उबारा है।।
श्वसुर है नागराज, मित्र जाके देवराज,
वाहन है गजराज, बाज बंधे द्वार है।
नगर बसाया, वर सिंहनी से पाया,
कुल देवी महामाया, ऐसो राजन हमारों है।।

शीश पर छत्र रहे, कीर्ति सर्वत्र रहे,
द्वार पर बज रहे नौबत नंगारा है।
हृदय में शक्ति रहे, भक्ति अनुरक्ति रहे,
धर्म कर्म मर्म हमें प्राणों से प्यारा है।।
रहे है तराजू हाथ, दान रहे साथ-साथ
कान पै कलम रहे, कमर में दुधारा है।
अमर इतिहास रहे, मुख पर हास रहे,
जय अग्रसेन रहे, नारा हमारा है।।

अग्र रहे वीरता में, वीरता गंभीरता में,
बापुरो सिकन्दर कहा, देवराज हमारा है।
अग्र रहे ज्ञानियों में, दानियों में मानियों में,
हरि हर लक्ष्मी का हमको ही सहारा है।
ईंट ओ रूपया के, दिवैया हर अतिथन को,
निर्धन की नैया को दीनौ सहारा है।
अग्र है समग्र देश में, त्रिलोक सर्वदा से,
याही हेत अग्रवाल, नाम भी हमारो है।।

\- त्रिलोक गोयल

तुम अग्रज्योति की प्रथम किरण

तुम अग्रज्योति की प्रथम किरण, तुम साम्यवाद के प्रथम धाम।
तुम वैश्य वंश के प्रथम राज, तुम वांधवता की प्रथम शोध॥
तुम द्वापर युग में जन्मे थे, तुम देव युद्ध में चमके थे।
तुम अचल रहे हिमगिरी सम थे, तुम मरूधर में सागर सम थे॥
तुम ने फहराई कीर्ति ध्वजा, तुम से की सन्धि पुरन्दर ने।
तुम बने मित्र पाण्डव कुरू के, तुम ने देखा उत्थान पतन॥
तुम नागवंश के मान्य बने, तुम लक्ष्मी के वरदान बने।
तुम धन कुबेर पति कहलाए, तुम को पाकर हम धन्य हुए॥

- निरंजन लाल गौतम

हे अग्रसेन तुमको प्रणाम

भारत माता के पुण्य पूत, हे मानवता के अग्रदूत।
हे अग्रोहा के संस्थापक, हे अग्रसेन तुमको प्रणाम॥
जो ज्योति बने मानवता की, तुमने जो लिखे अमर लेख।
जो जागृति मंत्र बने युग की, वो खेंची तुमने अमिट रेख॥
अंकित युग के वक्षस्थल पर, हे देव तुम्हारा पुण्य नाम।
देकर समता बन्धुत्व भाव, दुखियों को तुम दिये प्राण॥
जाति को एकता मंत्र दिया, वीरता गुणों से किया त्राण।
झुक कर आंधी तुफानों ने तेरे चरण को लिये हैं थाम॥
तुम सिद्ध तपस्वी योग्य यती, हे समरागण की कीर्ति धवल।
यूनान सिकन्दर ने देखा, तेरे पौरूष का सूर्य प्रबल॥
तेरे गौरव के रथ की गति ने, पाया न कभी दोक्षण विश्राम।
हे अग्रोहा के संस्थापक, हे अग्रसेन तुमको प्रणाम॥

- सत्यप्रकाश 'बजरंग'

अग्रवशं के मूल प्रवर्तक

अग्रवशं के मूल प्रवर्तक, हम सब के शुभ पिता महान।
गौरव रक्षक विप्र उपासक, शांति अहिंसामय गुणवान॥
लक्ष्मी जी के परम भक्त शुभ, वीर तपस्वी धीर महान।
तेरे बालक खड़े हुए है, मांग रहे यह शुभ वरदान॥
हम को दो शुभ आशीष दान। जय हो अग्रसेन महाराज॥

बल्लभ नृप के ज्येष्ठ सुवन तुम, अगरोहा के नृपति महान्।
वैश्य जाति कुल कमल दिवाकर, आर्य धर्म के पावन प्राण॥
पिता तुम्हारा पूर्ण पराक्रमी, कठिन तपस्या अतुलित दान।
जल थल नभ में व्याप्त रहा है, करता जगती का कल्याण॥
सब मिल करते हैं आव्हान। जय हो अग्रसेन महाराज॥

बसुधा के अंचल में अब भी, मुखरित है तब गौरव ज्ञान।
अगरोहा के जीर्ण चिन्ह भी, आज बताते तेरी शान॥
स्वर्गलोक में इन्द्र देव प्रति, नारद गाते तेरे गान।
यमुना तट मथुरा नगरी में, पाया महालक्ष्मी वरदान॥
अग्रवंश के पिता महान, जय हो अग्रसेन महाराज॥

भरो वीरतापूर्ण पराक्रम, हम सब को दो विद्या दान।
अग्रवंश की विमल पताका, फहरे जग में हो द्युतिमान॥
पूर्ण संगठन के बन्धन में, बंध जाती तेरी संतान।
न्याय धर्म की शुभ वेदी पर करें सभी सर्वस बलिदान॥
ऐसा दो पूरण वरदान, जय हो अग्रसेन महाराज॥

- चिरंजी लाल अग्रवाल

युग पुरुष। युग-युग तुम्हारी मैं करूंगी वन्दना

युग पुरुष। युग-युग तुम्हारी, मैं करूंगी वन्दना।
लोक के कल्याण हित, उत्सर्ग जीवन कर गये।
डाल आहुति यज्ञ में, आलोक सौरभ कर गये।
दे रहा सम्बल सबल, उस धवल की वन्दना।
युग पुरुष। युग-युग तुम्हारी, मैं करूंगी वन्दना॥

सत्य के पथ में सदा, बन ज्योति जो आगे बढ़े।
जो सुमन बन जननि के, शीश पर सादर चढ़े।
जो उठे आगे समर में उन चरण की वन्दना।
युग पुरुष। युग-युग तुम्हारी मैं करूंगी वन्दना॥

चूम कर किरण सुनहरी, साथ ले सरसिज खिले।
झूल मलयज के हिण्डोले, पंक में फिर जा मिले॥
जो सजे मां मुकुट में, उस कमल की वन्दना।
युग पुरुष। युग-युग तुम्हारी, मैं करूंगी वन्दना॥

जाति को जीवन दिया, निर्माण में निर्भय बढ़े।
जो बनाते राह उन्नति, के शिखर पर जा चढ़े।
पथ प्रदर्शक अग्रजन के पद युगल की वन्दना।
युग पुरुष। युग-युग तुम्हारी, मैं करूंगी वन्दना॥

सिंधु से पाकर सुधा, सुर फूलने फलने लगे।
पर चराचर विश्व के, विष-ज्वाल में जलने लगे।
जो फले अमरत्व बन कर उस गरल की वन्दना।
युग पुरुष। युग-युग करूंगी, मैं तुम्हारी वन्दना॥

प्यार है अपनों को, आंसू भी प्रियजन के लिये,
धन्य वह बलिदान जिसको, अर्घ्य दुश्मन भी दिये।
जो भरे अरि-मृत्यु पर, उन दृग सजल की वन्दना।
युग पुरुष। युग-युग करूंगी, मैं तम्हारी वन्दना॥

गिरिजा देवी "निर्लिप्त"

उस कोख को हजार बार नमन

उस कोख को हजार बार नमन, जिस कोख में जन्म लिया तुमने।
उस गोद को हजार बार नमन, जिस गोद में क्षीर पिया तुमने॥
उस गेह को हजार बार नमन, जिस गेह को प्यार दिया तुमने।
उस माटी की कौन करे जिसपै, निज जीवन वार दिया तुमने॥
साधना बनी जिनका जीवन, उनमें भी तो तुम आगर थे।
है जन्म मात हो गई अमर, तुम ऐसे वंश उजागर थे।
देखी न गई पीड़ा तुमसे, तुम दीनों के नट नागर थे।
सागर में गागर हो न कोई, तुम तो गागर में सागर थे॥
तुम दान दिया धनहीनन को, मतिहीनन के हितकारी बने।
तुम मान को पान दिया सबको, सबके मनके सतकारी बने॥
सबमें सुख बांट दिया अपना, सबके दुख के अधिकारी बने।
तुम राजा बने महाराजा बने, व्यापारी बने बलकारी बने॥
तुम मीत बने दलितों के लिये, दुखियों के लिये सुख साज बने।
दनुजों के लिये तलवार बने, दुश्मन के लिये तुम गाज बने।
अबलाओं के लाल बने तुमही, समता की तुम्ही आवाज बने,
तुम भाल बने निज भारत के, जनता के लिये सरताज बने॥

- प्रो. ओमपाल सिंह "निडर"

वरदान हमें शुभ ऐसा दो

हे दिव्य पुरुष तुम अग्रगण्य, हे सूर्य वंश आलोक प्रखर।
अग्रकुल भूषण ज्योतिर्मय, हे दिग्विजयी तुम वीर प्रवर॥
कितनी ही विजय प्राप्त करके, युद्धोन्माद से मुख मोड़ा।
अपनाया दया अहिंसा को, बन वैश्य क्षात्रपद को छोड़ा।
तुम लोकतंत्र के सूत्रधार, राजर्षि लोकप्रिय जननायक।
गणराज्य बना था अग्रोहा, शासक थे उसके गणनायक॥
तुमने ही जग को सर्वप्रथम, शुभ समाजवाद की शिक्षा दी।
विख्यात किवदंती में है, रूपया ईंटों की परिपाटीदी॥
समता भ्रातृत्व भाव अनुपम अपने पुत्रों को सिखलाया।
अब डेढ़ कोटि हैं तब, उन आदर्शों को बिसराया।
हमको संबल दो आदि पिता, हे पथ प्रदर्शक पथ दिखलावो।
जागे स्वजाति-अभिमान पुनः, वरदान हमें शुभ ऐसा दो॥

- मदनमोहन गुप्त

सूर्यवंश के उत्तम कुल में महीधर नाम नरेश हुआ

सूर्यवंश के उत्तम कुल में, महीधर नाम नरेश हुआ,
उसके महाप्रतापी राजा, अग्रसेन का जन्म हुआ।
महाराज श्री अग्रसेन को, लोहागढ के जंगल में,
बचा जनती मिली सिंहनी, एक वृक्ष की छाया में॥

जन्म लेते ही सिंहपुत्र ने, नृप के गज पर वार किया,
गज मस्तक पर थाद मारकर, देवलोक को गमन किया।
सिंहनी ने क्रोधित होकर, अग्रसेन को श्राप दिया,
पुत्र नहीं होगा तेरे भी, तूने मुझको कष्ट दिया॥

दुर्गं अटूट बनाया वहां पर, अग्रसेन महाराज ने,
रजधानी अग्रोहा नामक, नगर बसाया आपने।
पुत्र प्राप्त करने को नृप ने, वन में घोर तपस्या की।
बारह वर्ष के बाद राजा को, कौशिकमुनि ने आज्ञा दी॥

त्याग करो अब क्षात्र धर्म का, वैश्य वर्ण स्वीकार करो,
पुत्र तुम्हारे तब ही होंगे, इसमें न सोच विचार करो।
पुत्र हेतु राजा ने अपने, क्षात्र वर्ण को छोड़ दिया,
नौ पुत्रों के पिता बने तब शिव भक्ति में ध्यान दिया।

नृप भक्ति से हुए प्रसन्न तो, प्रकट भए शिव शंकर,
राजा को दे दिया पुरोहित, नाम था जिसका कोहशंकर।
कोह शंकर थे वंशज ब्राह्मण, गौड़ कंसनिया है,
अब तक जो अग्रवंश के पूज्य पुरोहित ब्राह्मण हैं॥

इसी समय में नागराज की सत्रह कन्या बड़ी हुई,
एक जगह ही ब्याहूं इनको, यह नृप के मन चाह हुई।
विप्र खोजने निकले वर, सत्रह पुत्रों के पिता कहां,
अन्न जल लेंगे वहीं, सत्रह पुत्रों का पिता जहां॥

अग्रोहा में अग्रसेन ने, धैर्य विप्रगण को बंधवाया,
सत्रह पुत्र बताये अपने, विप्रों का अनशन छुड़वाया।
चिन्तित होकर अग्रसेन तब, लगे ध्यान प्रभु का करने,
आठ पुत्र दे दिये विष्णु ने, राजा की इज्जत रखने॥

धूमधाम से चले अग्रपति, नाग लोक को सजा बरात,
पुत्री तभी एक और जन्मी, नागलोक अचरज की बात।
बेटा एक और होवे तो, बात रहेगी राजा की,
या बारात अनव्याही जावे, इज्जत बिगड़े राजा की॥

अग्रसेन ने अपनी भागिनी, के बेटे को याद किया,
आया तब असभोज भानजा, पुत्र एक और प्रकट किया।
धूमधाम से ब्याह हुआ और, सब जन अग्रोहा आए,
घर-घर खुशियां छाई, महिलाओं ने मंगल गान किये॥

बहुत समय बीता पर दुल्हन, नागिन बनी रहीं वे सब,
अग्रोहा में चिन्ता व्यापी, राजा भी चिंतित थे तब।
श्रावण शुक्ला पंचमी को, गई कन्याएं बन कर नारी,
अपने चोले छोड़ गई थीं, बाम्बी पूजन को सारी॥

तब गजराज भानजे ने, चोले डाले अंगारों में,
इससे बनी रही वे नारी, सुख पाया रनिवासों में।
उनके ही वंशज हैं हम, जो अग्रवाल कहाते हैं,
अग्रवाल इतिहास पुरातन, उसका सार बताते हैं॥

– श्रीमति सीता देवी गर्ग

तुमको प्रणाम शत शत प्रणाम

हे अग्रवंश के अग्रदूत, अभ्युदय दूत भारत सपूत।
हे महापुरूष हे जाति प्राण, तुमको प्रणाम तुमको प्रणाम॥
हे अग्रवाल कुल तिलक भाल, अग्रवंश के चिर मशाल।
हे जाति के उजागर पुण्य धाम, तुमको प्रणाम शत शत प्रणाम॥
हे अन्नदाता हे प्रजापाल हे जाति पुरूष तुम अग्रमहान्।
रक्षक पोषक सुख शांति धाम, तुमको प्रणाम शत शत प्रणाम॥
हे वंश प्रवर्तक अग्रसेन ओ पूज्य पितामह अग्रसेन।
स्वीकार करो मेरा प्रणाम, तुमको प्रणाम शत शत प्रणाम॥

– गोपाल कृष्ण गोयल

अग्रवंश प्रवर्तक तुमको, शत शत बार प्रणाम

जब प्रकाश की रश्मि कहीं दी थी न दिखाई क्षितिज पार,
घना अंधकार था व्याप रहा चिर निद्रित जन भूले बिहार।
शोणित के प्यासे से दिखते, दुश्मन बने भाई के भाई,
भक्षण, शोषण ही कार्य रहा, थी धरा भार से अकुलाई।
असमय ऐसे में भू प्रकटे, हे अग्रज अरुणोदय ललाम।
अग्रवंश प्रवर्तक तुमको, शत शत बार प्रणाम॥

हे कर्मवीर ! हे दानवीर ! तुम क्षमाशील प्रश्रयदाता,
भारत वसुन्धरा धन्य हुई, तुम सम पुत्र पा जग त्राता।
बल निर्बल के, धन निर्धन के, तुम दीनबन्धु के दीनानाथ,
यह अग्रवंश था धन्य हुआ, पा परमपिता का वरद हाथ।
साम्यवाद के जनक तुम्ही, रक्षक, पोषक, सुख शांति धाम।
अग्रवंश प्रवर्तक तुमको, शत शत बार प्रणाम॥

- एच. पी. गर्ग

समाजवाद के प्रथम प्रवक्ता

सत्य अहिंसा समाजवाद के प्रथम प्रवक्ता।
महालक्ष्मी के सेवक साधक धर्म नियन्ता॥
अग्रोदक महाराज तुम्हारी अक्षय नीति से।
भरा अग्र भण्डार, लाभ शुभ रिद्धि सिद्धि से॥
आज करोड़ों अग्रवाल तक सुयश पताका।
फहराते हैं जग में लेकर दूनी आशा॥
भूल गये पर अग्रोहा की जन्म भूमि को।
पावन परम महान तपोमय कर्म भूमि को॥
ध्वस्त-त्रस्त अग्रोहा उजड़ा सा खण्डर है।
अग्रकीर्ति क्यों हुई आज इतनी नश्वर है॥
करो पुनः निर्माण लुप्त सुप्त गौरव को।
अग्रसेन की धरती के मणिमय वैभव को॥
रचो नया इतिहास पुराने उन टीलों पर।
गत अतीत को चमका दो फिर से श्रम कर-कर॥
तभी तुम्हारा जीवन है वैभव सार्थक।
गौरव सार्थक और अनुभव सार्थक॥

- दुलीचन्द अग्रवाल

वह कौन कहो जिसने एक नया अभियान दिया

वह कौन कहो जिसने जन को, एक नया अभियान दिया।
वह कौन कहो अग्रोहा को, जिसने नवरूप प्रदान किया।
वह कौन कहो जिसने समता का, नव आलोक विखेरा था,
वह कौन कहो जो लोक तन्त्र का, अद्‌भूत रंग विखेरा था।
जो साम्य योग का अधिनायक, सुख समता जिसकी अमर देन,
वह अग्रसेन, वह अग्रसेन।

वह कौन ग्राम जहां बन्धु भावना, बढ़ी पली परवान चढी।
वह कौन ग्राम कवियों ने जिसकी, गौरव गाथा खूब पढ़ी॥
वह कौन धरा जिसके आंचल में पौरूष खुल कर खेला था।
वह कौन धरा जिसकी रज कण में, सुख समता का मेला था।
वह कौन ग्राम जिसकी गरिमा ने, अभ्यागत का मन मोहा।
वह अग्रोहा, वह अग्रोहा।

वह कौन कहो जो अग्रसेन की, वाणी समझ नहीं पाया,
वह कौन कहो जो प्यार परस्पर, अब तक बांट नहीं पाया।
वह कौन कहो जिनके बस में, धन-जन की ताकत बहुत बढी,
वह कौन कहो जिसकी जन्मभूमि अब तक वीरान पड़ी।
वह अग्रसेन की प्रतिमा पर हर वर्ष चढ़ाता फूल माल।
वह अग्रवाल, वह अग्रवाल।

- दुलीचंद शशि

श्री अग्रसेन चालीसा

सोरठा

सुमिरहुं श्री गणराज, प्रथम पूज्य गिरजा सुवन।
सुफल सरहूं सब काज, बार-बार वंदहुं चरन॥

चौपाई

बंदहूं महा महिम अवनीशा, अवतारेउ जन हित जगदीशा।
भानु वंश जिन्ह कीन्ह उजागर, अनुपम अति शोभा सुखसागर।
मुकुट मनोहर माथे सोहे, भाल विशाल तिलक मन मोहे।
अलकें घुघरालीं अतिप्यारी, मोतिन लरन गुथीं रतनारी।
कमल नयन वर भृकुटि विशाला, कानन कनक जड़ित शुचिवाला।
नासा अमित मनोहर नीकी, दाढ़ी शुभ्र मूंछ प्रभु जी की।
निरख मदन मन रहो लुभाई, शशि आनन की सुन्दर ताई।
अंग अंगरखी ललित सुहाई, चूड़ीदार विचित्र सराई।
हीरन हार कंठ मणि माला, बिचबिच मोतिन मन्डित आला।
फैट कृपान कसी कटि नीकी, अरिदल गजन तेज अनीकी।
जय जय अग्रसेन महाराजा कीन्हों सकल विश्व को काजा।
जय नृप रिषि जय गौ हितकारी, अग्रदेव जय जय असुरारी।
त्रैता युग अवतार अनेका, भये विचित्र एक ते एका।
महाराज महिधर नृप गेहा, लीनेहु प्रभु अवतार सनेहा।
श्रुति कहि बारंबार पुकारी, लीला अपरंपार तिहारी।
वैश्य वंश के अग्रअधिष्ठा, श्राप निवार निभाई निष्ठा।
इष्ट देव प्रभु पूज्य हमारे, जीव मात्र के हैं रखवारे।
तपो भूमि सुन्दर सुचि जानी, नगर बसाय कीन्ह रजधानी।
वापी कूप तड़ाग खुदाये, मन्दिर विविध वरन बनवाये।
परम रम्य अग्रोहा पावन, सकल कलुष त्रय ताप नसावन।

दिव्य राज दरबार अनूपा, बाजहिं जड़ित सिंहासन भूपा।
छत्र चमर अनुपम छवि छाजै, निरख देवपति को मन लाजै।
पुत्र बली युवराज अठारा, चतुर सूर सरदार अपारा।
सुखी रहिहिं सब पुर के लोगा, सुलभ जिन्हें सुरपुर सम भोगा।
सकल तीर्थ नाना विधि कीन्हे, बहु प्रकार विप्रन धन दीन्हे।
वेद पुरान सुने मन लाई, पूरे सत्रह यज्ञ कराई।
पशु हिंसा लखि यज्ञ अधूरी, छोड़ दई कीन्हीं नहिं पूरी।
अग्रवाल कुल तिहते पाये, साढ़े सत्रह गोत्र कहाये।
गरगसु गोइल सिंहल मीतल, बांसल काँसल ऐरन जीतल।
कुच्छल मंगल तायल तिंगल, धारण भंदल नागिल बिंदल।
मधुकल गोयन नाम धराये, इक इक पुत्रन सौप चलाये।
तिह साखें त्रयलोक समानी, सूखी सकल समृद्ध दिखानी।
कीन्ह विविध विधि देव भलाई, वसुधा निरख निरख बलि जाई।
प्रभु अपने जन की रुचि राखें, पूरन करहिं सदा अभिलाखें।
सुमिरत अग्रदेव जगमाहीं, कठिन सो काज सुलभ हो जाहीं।
सहित सनेह ध्यान धर जोई, मन वांछित फल पावै सोई।
अग्रदेव चालीसा पढ़ तन, सुफल होय जन को मानस तन।
रोग हरै तन तेज प्रकासै, नित नव सुख संपत्ति गृह वासै।
धन्य होय प्रभु के गुण गावैं, परमानन्द मगन मन रहावें।
बालक अबुध दीन जन जानी, कृपा करहु कुल गुरु गुण ज्ञानी।

दोहा

प्रेम सहित नित पाठ कर, ध्यावहिं जो चित लाय।
अग्रसेन महाराज जी, ताकी करहिं सहाय॥
सेवक बाबूलाल सौं, कह लायो गुरु देव।
हृदय गोय राखहु सुजन, जीवन को फल लेव॥

- बाबूलाल अग्रवाल

नींव का अस्तित्व

बेचारी नींव,
धंसी हुई मिट्टी में,
हवा पानी कुछ नहीं,
न रंगाई, न पुताई,
न होती कभी सफाई।
बन जाते हैं घर कभी कीड़े मकोड़ों के,
आ जाता है बह बह गंदा पानी इसमें,
हमेशा सीलन और बदबू।

कंगूरे ने देख आकाश में अपने को,
अट्टहास किया जोर से,
सब करते हैं मेरी प्रशंसा,
मैं रहता खुले आकाश में,
हमेशा ताजा महकती बयार,
चमचमाती रोशनी में बैठा हूं शिखर पर,
सब मेरे नीचे, मैं सबके उपर।

नींव ने विन्रमता से कहा,
भैया दम्भ करना ठीक नहीं,
जिस आधार पर टिके हो तुम,
वह मैं ही हूं,
मैने ही दिया सहारा तुम्हें,
तभी तुम उठ पाये हो।

क्रोधित हुआ कंगूरा,
सुनकर नींव की बातें
बोला,
क्या वजूद है तुम्हारा,
आधीन हो तुम मेरे,
मेरे पैरों के नीचे,
दबा दूंगा अपने वजन से,
तो चूर चूर हो जाओगी

भैया नहीं,
नींव ने फिर कहा,
सत्य से मुंह मत मोड़ो,
सत्य यही है, घमण्ड ठीक नहीं,
फिर मर्जी तुम्हारी।
मंजिल पर मंजिल चढ़ती गई,
कंगूरा ऊंचा होता गया,
नींव पर बोझ बढ़ता रहा,
अट्टहास करता हुआ
अभिमान में मदहोश हो गया

जब हो गई अति,
सहन न हुआ नींव से,
उसने अंगड़ाई ले ली,
इमारत चटक गई,
कंगूरा धराशाई हो गया,
ऊपर से गिरा, टुकड़ों में बिखर गया।

मित्रो, सत्य यही है,
आधार को महत्व न दोगे,
सहारे पर टिके हैं आप जिसके,
उसी की उपेक्षा करोगे,
तो आधारहीन होकर,
गिर जाओगे तुम भी,
उस घमण्डी कंगूरे की तरह।

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

सहयोग की भावना से

कहते हैं ख्याल सच नहीं होते,
झूंठे होते हैं ख्वाब की तरह।
किन्तु यह कथन भी,
सच नहीं होता है हर वक्त,
हो जाते हैं ख्याल भी हकीकत।
उस ख्याल की तरह,
जो आया था मेरे मन में।
दे रहा था दस्तक कोई,
द्वार पर मेरे,
आना चाहता था अन्दर,
मांगने को सहायता मुझसे।
दरवाजा खुला तो वह अन्दर आया,
कुछ कहना चाहता था,
किन्तु यह देख कर कि यह स्वयं असहाय है,
कुछ कह न पाया, वापस जाने लगा।
मैंने पूछा राही,
कैसे आये, क्यों लौट चले ?
बोला, चाहता था सहायता तुमसे,
किन्तु देख कर तुम्हे असहाय,
वापस जा रहा हूं।
मैने कहा मित्र,
सभी हैं असहाय यहां,
और सहायक भी हैं सभी,
याद दिलाई वह कहानी।
जो पढ़ी थी बचपन में।
एक अंधा और एक लंगड़ा था,
दोनों असहाय थे, भीख मांगते थे,
दोनों ने सहायता की एक दूसरे की,
अंधा बन गया पांव लंगड़े का,
और लंगड़ा बन गया आंख अंधे की,
मिल कर काम किया दोनों ने,
जिन्दगी सम्मान से काटी।
इसी तरह हे मित्र,
हम सभी असहाय हैं यहां,
फिर भी यदि करें हम वादा,
मिल कर साथ रहने का,
एक दूसरे के लिये सहायक बनने का,
तो कोई न होगा असहाय यहां,
करेंगे काम मिलजुल कर,
बनेंगे एक दूसरे के पूरक,
सहयोग की भावना से,
समर्थ हो जायेंगे सभी।

- प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त"

अपनी पत्नि क्यों छोड़ दी

हे अग्रवाल बन्धु तुमने ये, लोक लाज क्यों छोड़ दी।
नकली दहेज के चक्कर में, अपनी पत्नि क्यो छोड़ दी। हे भाई। हे भाई॥
जिसके संग तुमने फेरे लिये, क्यों उसको तुमने दगा दिया।
वचन जो अग्नि समक्ष लिये, क्यों उसको तुमने भुला दिया॥
क्या पाप किया था उसने जो, तुमसे शादी जोड़ ली।
नकली दहेज के लालच में, वो शादी तुमने तोड़ दी। हे भाई । हे भाई।
क्यों तुम बारात लेकर आये थे, उत्तर दो, उत्तर दो॥
क्यों तुमने विवाह बंधन को जोड़ा था, उत्तर दो, उत्तर दो॥
क्यों लाज तुम्हें नहीं आई मेरे भाई, उत्तर दो, उत्तर दो॥
इन्सान बनो, शैतान बनो मत भाई,
दया नहीं आई तुमको जो, उसको जीवित मार दी।
नकली दहेज के लालच में, घर की लक्ष्मी को त्याग दी ॥ हे भाई । हे भाई ॥
हे अग्रवाल बन्धु तुमने ये, लोक लाज क्यों छोड़ दी।
नकली दहेज के चक्कर में, अपनी पत्नि क्यों छोड़ दी। हे भाई। हे भाई॥

- प्रहलाद कुमार गुप्ता, भक्त

सासू जी से एक निवेदन

हे मेरी आदरणीय सासूजी,
मेरी पत्नि की पूज्य माताजी,
तुमने अपनी बेटी को भड़का कर,
मेरी मम्मी से मेरी पत्नि का झगड़ा करवाया है,
शांत रहने वाले इस घर में कलह का बीज बोया है,
मेरी शांति और नींद हराम करदी है,
अब भी शायद तुमको चैन नहीं है,
और मेरी पत्नि का,
मुझसे भी झगड़ा करवाने पर तुली हो।

मैं भी यह आस लगाये बैठा हूं,
तुम भी बनोगी सास अपनी बहू की,
अर्थात मेरे साले की पत्नि की,
तब मैं भी तुम्हारी बहू को,
और मेरे साले की सास को,
बहका कर लूगां बदला,
झगड़ा करवाऊंगा तुमसे,
तुम्हारी बहू का,
तुम्हारे बेटे की सास का,
और तुम्हारे बेटे बहू का
तब मेरे दिल को सकून मिलेगा।

अभी भी वक्त है, संभल जाओ,
और छोड़ दो बहकाना मेरी पत्नि को,
करवादो प्रेम मेरी पत्नि और मम्मी का,
ताकि मेरे बदले की भावना शांत हो जाये,
और दोनों घर बर्बादी से बच जायें।

- प्रहलाद कुमार गुप्ता, भक्त

चरणाम्बुज में वन्दन है

अभिनन्दन है अभिनन्दन है, चरणाम्बुज में वन्दन है।
परम पूज्य श्री अग्रसेन को, श्रद्धाजंली समर्पण है।।
युगाधार हे पुण्य-पुरूष जय, अग्रवंश के हो नव प्राण।
साम्य और समता संस्थापक, मानवता के नव निर्माण।।
ज्योति पुंज शाश्वत गरिमायुत, भाव भरा अभिनन्दन है।
परम पूज्य श्री अग्रसेन को, श्रद्धाजंलि समर्पण है।।
एक रूपया और एक ईट नव, आगन्तुक को दिलवाया।
अर्थ विषमता हर समता से, अग्रवंश को पनपाया।।
नई चेतना के अभियंता, विश्वबन्धु शत वन्दन है।
परम पूज्य श्री अग्रसेन को श्रद्धांजलि समर्पण है।।

गौरवशाली अग्रवंश के, संस्थापक को वन्दन है।
मंगलमय इस पुण्य धरा पर, महा-महिम अभिनन्दन है।।
प्रेम पुंज श्रद्धा स्नेह का पद पंकज ही चन्दन है।
परम पूज्य श्री अग्रसेन को श्रद्धांजलि समर्पण है।।
अग्रोहा व अग्रवाल के, महा-मनुज शत वन्दन है।
वैश्य जाति कुल कमल दिवाकर को जयमाल समर्पण है।
मंगलमय मधुरिम गीतों से, पुनः पुनः अभिनन्दन है।
परम पूज्य श्री अग्रसेन को, श्रद्धांजलि समर्पण है।।

- कल्याणमल गोयल "झण्डेवाला"

कविता लेखकों के पते

1. प्रहलाद कुमार गुप्ता "भक्त",
एस-9, माया मन्दिर, पुष्पाजंलि कॉलोनी, महेश नगर फाटक, जयपुर-302 015
2. डा. राधा गुप्ता, एस-9, माया मन्दिर, पुष्पाजंलि कॉलोनी, महेश नगर फाटक, जयपुर
3. परमानन्द जनकवि, पुरानी कचहरी, हिसार
4. बैद्य निरंजन लाल गौतम 7/28, ज्वाला नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032
5. राजेन्द्र प्रसाद गर्ग, राजेश, 26/2, आरमेन्यत स्ट्रीट, कलकत्ता
6. मुरारी लाल बंसल, फिरोजाबाद, उत्तरप्रदेश
7. बाबूलाल अग्रवाल, छतरपुर
8. कृष्ण मित्र, 102 राकेश मार्ग, गाजियाबाद
9. कल्याणमल झण्डेवाला, शांति निकेतन, सवाई माधोपुर
10. त्रिलोक गोयल, अग्रसेन नगर, अजमेर
11. द्वारका प्रसाद अग्रवाल, बेचैन
12. ओकारनाथ अग्रवाल
13. चिरंजीलाल अग्रवाल, 8/867, रामकृष्णापुरुम्, नई दिल्ली - 110022
14. सत्यप्रकाश बजंरग, दिल्ली
15. गिरिजा देवी, निर्लिप्त
16. प्रो. ओमपाल सिंह, निडर, दुर्गानगर, फिरोजाबाद - 283203
17. श्री मदनमोहन गुप्त, A-84 बी, साउथ एक्सटेंशन, भाग-2, नई दिल्ली-110049
18. श्री गोपाल कृष्ण गोयल, बृजराजपुरा, कोटा
19. श्रीमती सीता देवी गर्ग
20. श्री दुली चन्द "शशि", हिन्दी नगर, गौशाला महल, हैदराबाद - 500012
21. श्री राजकुमार अग्रवाल, वृद्ध
22. श्री दुलीचन्द अग्रवाल, 74-बड़तलया स्ट्रीट, कलकत्ता - 700007
23. श्री मनोहरलाल, चण्डीगढ़
24. श्री सरस्वती कुमार, दीपक, 580-स्टेशन रोड़, कुर्ला, बम्बई
25. श्री नरेन्द्र मोहन अग्रवाल, पागल, गांधी चौक, सदर, नागपुर
26. चन्दन बाला जैन, 1661, ज्योतिपुर, हिसार (हरियाणा)
27. रमेश चन्द मित्र, अंगार, आमलपुर, बिहार
28. श्री चन्द्र कुमार चन्द्र, सुकुमार, कृष्णा बिहार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
29. श्री एच. पी. गर्ग, 9/816, मालवीय नगर, जयपुर

पुस्तक अग्रसेन गीतांजलि
के प्रकाशन पर
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

★ **बाबूलाल गुप्ता**
हीं स्टोर्स, गोपाल कॉलोनी,
हिण्डोन सिटी, जिला करौली (राज.)

★ **अन्तू लाल गुप्ता, एडवोकेट**
वन बिहारी भवन, नाहरगढ़ रोड, जयपुर

★ **दिनेश चन्द गुप्ता**
भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि.,
वी. के. आई. एरिया, जयपुर

पुस्तक अग्रसेन गीतांजली के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई
सतपाल अग्रवाल फोन: 594591
तनु टैण्ट डेकोरेटर्स
139, अवधपुरी द्वितीय, महेशनगर, 80 फुट रोड फाटक के पास, जयपुर
हमारी विशेषताएं—
मैरिज हाल, गार्डन सुविधा उपलब्ध
नया पांडाल व नया सामान, हलवाई, कैटरिंग,
लाईट आदि की अच्छी व्यवस्था।
शादी पार्टियों आदि की बुकिंग के लिये सम्पर्क करें।

शुभकामनाओं सहित फोन: 568427
मोबाईल 98280.24427
राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता
भारत प्रिंटिंग प्रेस
भारत कार्ड्स
सभी प्रकार के शादी कार्ड, बधाई कार्ड, विजिटिंग
कार्ड आदि के विक्रेता एवं मुद्रक
आफसैट, स्क्रीन प्रिंट, लैटर प्रेस पर छपाई की उत्तम व्यवस्था
490, हनुमान का रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित फोन: 391968
डा० गिरिराज प्रसाद मित्तल
प्रधान सम्पादक
अग्रोदक
38/46, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर
नयी पीढ़ी का नियमित प्रकाशित राष्ट्रीय समाचार पत्र

संक्षिप्त परिचय

मूलतः करौली नगर में जन्मे श्री प्यारे लाल एवं धूपी देवी के पुत्र श्री प्रहलाद कुमार गुप्ता एक सामाजिक कार्यकर्ता, सेवाभावी व्यक्तित्व और भारतीय संस्कृति के वाहक हैं। राजधानी की दर्जनों सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े श्री गुप्ता ने अग्रवाल समाज, विश्वव्यापी संस्था स्काउटिंग, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अन्य कई संस्थाओं के पदाधिकारी व कार्यकर्ता के रूप में जो पहचान बनाई है उससे ऐसा लगता है कि आप अपने आप में एक संस्था है। आप प्रति वर्ष गणेश चतुर्थी के अवसर पर एक ऐसे महोत्सव का आयोजन करते हैं जिसमें गणेशजी की भव्य झांकिया सजाने के साथ-साथ गणेश झांकी प्रतियोगिता एवं भजनों व देशभक्ति गीतों पर आधारित सांस्कृतिक संध्या में बिना किसी जातिगत भेदभाव के ऐसे छात्र-छात्राओं को मंच उपलब्ध करवाते हैं जिन्हें आसानी से कहीं भी मंच उपलब्ध नहीं हो पाता है। आपने कई मौलिक एवं चिन्तनशील विचार समाज को दिये है। आप एक अनुभवी लेखक एवं कवि भी हैं जिनकी सैंकड़ो रचनाएं राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, नवज्योति, समाचार जगत, सामाजिक पत्रिका अग्रोदक, सहकार पुकार आदि के साथ-साथ राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

आप अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के आजीवन सदस्य, पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन के मुख्य प्रवक्ता एवं जयपुर महानगर एवं देहात जिला अग्रवाल सम्मेलन के मंत्री है। १९७३ में जीव विज्ञान में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने विधि स्नातक, श्रम विधियों में डिप्लोमा, सहकारिता में डिप्लोमा, सीएआईआईबी, पत्रकारिता में स्नातक उपाधि एवं कम्प्यूटर का ज्ञान अर्जित किया। वर्तमान में आप राजस्थान राज्य सहकारी बैंक में सेवारत है।

पुस्तक "अग्रसेन गीतांजलि" के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

(हरिचरण सिंहल)
महामंत्री, अग्रवाल समाज, मालवीयनगर, जयपुर

अग्रवाल भाई क्या करें

संगठन के लिये	- स्थानीय अग्रवाल समाज समिति के सदस्य बन कर कार्यक्रमों व गतिविधियों में भाग लें।
	-अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के आजीवन सदस्य बन कर पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन एवं जिला अग्रवाल सम्मेलन की सदस्यता ग्रहण करें।
	-अग्रोहा धाम की यात्रा करें।
	-आपस में एक दूसरे का तन-मन-धन से सहयोग करें।
समाज की जानकारी के लिये	- अग्रवाल समाज की पत्र-पत्रिकाएं पढ़े/पढ़ायें।
	- पत्र-पत्रिकाओं में समाचार/लेख भिजवायें।
	- अपनी समस्याएं एवं सुझाव भिजवायें।
अग्रवाल समाज के प्रचार के लिये	- सर्व समाज के हितार्थ स्थाई कार्य संचालित करें/करायें।
	- अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल समाज से संबंधित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, अग्रसेन गीत प्रतियोगिता, अग्रसेन चित्र प्रतियोगिता, अग्रसेन नाटक, अग्रसेन निबन्ध प्रतियोगिता, आदि आयोजित करें एवं इनमें भाग लें।

मूल्य 20/-